त्योहारों के रंग

काव्य के संग

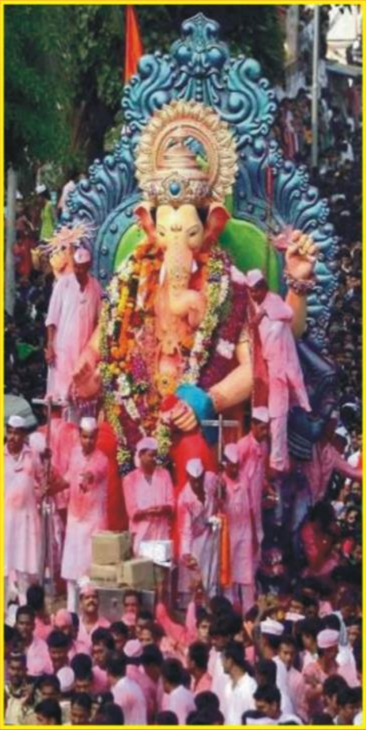

त्योहारों के रंग काव्य के संग

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

साधना छिरोल्या

त्योहारों के रंग काव्य के संग

(काव्य संग्रह)

साधना छिरोल्या

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-260-9
संपादक- डॉ; प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल- **antrashabdshakti@gmail.com**
वेबसाईट- **www.antrashabdshakti**
प्रथम संस्करण- 2020, साधना छिरोल्या
मूल्य- 250.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY SADHNA CHHRILOYA
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

1.	गणेश-चतुर्थी (सकट चौथ) तिल चतुर्थी व्रत	7
2.	महाशिवरात्रि	9
3.	भाई-दूज	12
4.	गणगौर	16
5.	पिपरदशा व्रत भाग 1(दशारानी की कथा)	18
6.	पिपरदशा व्रत भाग 2	22
7.	शीतलाष्टमी	26
8.	बारहजीत (आसमाई का पूजन)	27
9.	वट-सावित्री व्रत	32
10.	गंगा-दशहरा	36
11.	रक्षाबंधन (श्रावणी पूर्णिमा)	39
12.	कजरी की नवमी	41
13.	हलषष्ठी (हरछठ)1	44
14.	हलषष्ठी भाग 2	46
15.	हरतालिका व्रत (तीजा)	49
16.	ऋषि-पंचमी 1	52
17.	ऋषि-पंचमी 2	54
18.	छठ का हाथा	56
19.	संतान-सप्तमी	59
20.	गाजबीज की पूजा रोट पूजन (अनंत चतुर्दशी)	62
21.	रोट पूजन भाग 2	64
22.	महालक्ष्मी (हाथी की पूजा)	66
23.	करवा-चौथ	68
24.	बछबारस (गौवत्स-द्वादशी)	70
25.	धनतेरस	72
26.	दीपावली	74
27.	अन्नकूट	76
28.	औसान बीवी की कथा (सुहागलें)	78
29.	रविवार	82
30.	सोमवार (सोमवती अमावस्या)	84

31.	**मंगलवार**	87
32.	**बुधवार**	89
33.	**गुरुवार**	91
34.	**शुक्रवार**	93
35.	**शनिवार**	95

मन की बात

"विद्या बुद्धि के हो दाता, मंगल करो सब काज,
हे गणाधीश! हे गणपति,तुम राखियो मेरी लाज"।।

श्री हरि कृपा एवं आप सब के आशीर्वाद से मेरा नया हिंदी काव्य संग्रह त्योहारों के रंग,काव्य के संग आज आप सबके सामने हैं। मैं साधना छिरोल्या, रानी दमयंती की नगरी दमोह (मध्य प्रदेश) से। शिक्षा- बी.एस.सी., बी.एड., जन्म स्थान- जबलपुर (मध्य प्रदेश)।

मुझे बचपन से ही लिखने और पढ़ने का बहुत शौक था। लेखनी भी कुछ साल तक चली, किंतु फिर जीवन की इस आपाधापी में बीच के 25 वर्ष कहां गुजर गये। पता ही नहीं चला और उसके बाद फिर साथ मिला अंतरा शब्दशक्ति का, जिसने कुम्हार की अनगढ़ मिट्टी के समान हम जैसे रचनाकारों को एक नया रूप प्रदान किया और आज इस मुकाम तक पहुंचाया। मेरी जिंदगी का एक बहुत बड़ा सपना कि कभी किसी किताब में लेखक की जगह मेरा नाम भी हो,उसे पूरा करने में मेरी मदद की।

मेरी जिंदगी का मूल मंत्र है सरलता, सहजता और सकारात्मकता और कहीं ना कहीं वह मेरी रचनाओं में भी परिलक्षित होता है। बस मेरी यही कोशिश रहती है कि मैं जो कुछ भी लिखूं, वह आम जनमानस के हृदय पटल तक एक सकारात्मकता के साथ आसानी से पहुंच सके। मेरी जिंदगी के इस साहित्यिक सफर में कई छोटे-बड़े संगी साथी मिले, जिन्होंने मुझे आगे बढ़ने के लिए एक प्रेरणा प्रदान की। आज इस पुस्तक के माध्यम से मैं उन सभी का खूब-खूब आभार प्रकट करती हूं और चाहती हूं कि सभी की शुभकामनाएं सदा मेरे संग यूँ हीं चलतीं रहें। आप सब का आशीर्वाद सदा यूं ही बना रहे।।

धन्यवाद।

मेरी किताब

मेरी किताब त्योहारों के रंग काव्य के संग आज आपके सामने हैं। इस किताब में मैंने अपने बड़े-बुजुर्गों के द्वारा विभिन्न त्यौहारों पर सुनी हुई लोक कथाओं को शब्दों की लड़ियों में पिरोकर काव्य रूप में लिखने की एक छोटी सी कोशिश की है। वास्तव में, मैं आज अपनी इस किताब के माध्यम से अपने सभी बड़े-बुजुर्गों का खूब-खूब दिल से आभार प्रकट करती हूं एवं उनका आशीर्वाद चाहती हूं कि उन्होंने अपने मुखारविंद से इन लोक कथाओं को इतने अच्छे रूप में हमारे सामने प्रस्तुत किया कि, आज हम उनको एक काव्य रूप में ढालने का प्रयास कर पाये।

मेरी इस पुस्तक में कहीं अन्नकूट महोत्सव है तो कहीं दिवाली के जलते दिये। कहीं ऋषियों की कथायें हैं तो मां गंगा के अवतरण की कथा भी। कहीं बहू-बेटियों को शिक्षा देती हुई आदर्श कहानियां है तो कहीं भारत की वीर सुहागवती स्त्रियों की कथायें हैं। कहीं गजराज के महोत्सव हैं तो कहीं गौ माता के महत्व की कथायें।

भगवान गणेश और शिव की कृपा बरसाती कथायें हैं तो सौभाग्यवती स्त्रियों के त्योहार हरितालिका तीज और करवा-चौथ की कथायें भी।

आशा है आप सब का आशीर्वाद सदा यूं ही मिलता रहेगा।

मेरा यह हिंदी काव्य-संग्रह मेरे परिवार के स्तंभ परम पूज्यनीय श्रद्धेय कक्काजी (श्री सुदामा प्रसाद जी छिरोल्या) के प्रति सादर सस्नेह समर्पित।।

धन्यवाद

सदा आपकी शुभकामनाओं की आकांक्षी
साधना छिरोल्या
दमोह (मध्य प्रदेश)

गणेश चतुर्थी

(संकट चतुर्थी) की कथा

आओ-आओ एक बात सुनायें, सकट चौथ की कथा सुनायें,
कहतीं थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

एक समय की बात सुनाऊँ, सच्चा-सच्चा हाल बताऊं,
एक माई का नाती प्यारा, था वो उसका राज दुलारा।।

रोज सुबह से गाय चराये, हुई सांझ लौट घर आये,
माई थी गणपति की भक्तिन, सुबह शाम करती थी कीर्तन।।

नाती सांझ को घर पर आये, संग फूल और दूर्वा लाये,
माई फिर माला बनाकर, प्रेम से गणपति को चढ़ाये।।

एक कुम्हार था उसी गांव में, परेशान हरदम रहता था,
उसका अवा भी न पकता था, बर्तन एक भी न बनता था।।

उसका अवा बलि मांगता था, क्या करूं मैं यही सोचता था,
मन में बहुत सोचा-बिचारा, एक उपाय फिर मन में आया।।

गांव में अकेली बुढ़िया माई, संग में नाती भी है भाई,
कैसे करेगी पालन-पोषण, उसी की दे दूं बलि चढ़ाई।।

सुबह सवेरे नाती देखो, गाय चराने को है निकला,
उसकी ही बलि चढ़ाने, कुम्हार ने है उसको पकड़ा।।

नाती ने फूल और दूर्वा, गाय की पूंछ में बांध दी,
गाय अकेले चलते-चलते, माई के पास पहुंच गई।।

गाय को अकेले देखकर, माई दौड़कर आ गई,
नाती कुछ खतरे में है, माई तो है समझ गई।।

फूल और दूर्वा लेकर फिर, माई मंदिर पहुंच गई,
गणपति के चरणों में गिरकर, प्रार्थना वो करने लगी।।

कुम्हार ने नाती को पकड़, अवा में बैठा दिया,
और फिर विश्राम करने, अपने घर को चला गया।।

हूई सुबह कुम्हार जागा, अवा के वो पास है आया,
ज्यों ही ईंट उसने खिसकाई, उसमें से आवाज है आई।।
"ईंटिया न खिसके, दुबिया न मैली होय, माई-पूतन बिछुड़न न पड़े"

सुन कुम्हार खूब घबराया, राजा के पास है आया,
बोला सुन लो अरज हमारी, आन पड़ी है विपदा भारी।।

मेरे अवा में आवाज आई, बोलूं हाथ जोड़की नाईं
राजा अवा के पास है जाई, फिर से है आवाज आई।।

राजा ने ईंटें हटवाई, देखके अचरज में भर जाई,
दूध का तो कुंड भरा था, उसमें बालक खेल रहा था।।

दूर्वा भी खूब लहलहाई, गणपति ने कृपा बरसाई,
राजा ने दुंदुभी पिटवाई, किसका बच्चा खोज के लाई।।

सेवक माई को पकड़ के लाये, माई देख बहूत घबराये,
बोली राजा क्या हूआ है, कोई तो है मुझे बताये।।

राजा बोले सुनो बुढ़िया, कौन सा तुमने पुण्य किया,
अवा की अग्नि में भी तो, बालक सुरक्षित खेल रहा।।

माई बोली मैं क्या जानूँ, जाने मेरे गणपत स्वामी,
रात में नाती घर न आया, मैं तो मंदिर में पड़ी रही।।

माई की बातों को सुनकर, राजा ने उसे प्रणाम किया,
और फिर सारी प्रजा में, फरमान यह जारी किया।।

आज से ही यह तिथि, सकट चौथ कहलाएगी,
और सारी प्रजा भी, इस व्रत को करेगी।।

उस दिन से ही सब लोग, इस व्रत को करने लगे,
और गणपति जी भी देखो, अपनी कृपा बरसाने लगे।।

हे गणपति,हे मेरे स्वामी, करते बस इतनी विनती,
हरदम लाज रखना मेरी, हम तो लगाते हैं अर्जी।।

महाशिवरात्रि

आओ-आओ एक बात सुनायें, शिवरात्रि की कथा सुनायें,
कहतीं थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

दूर देश में एक बहेलिया, आर्थिक तंगी की खातिर,
जीवों को मारकर करता, परिवार की गुजर-बसर।।

एक समय तो ऐसा आया, कर्जा वो है चुका न पाया,
साहूकार ने देखो उसको, शिव-मठ में ही बंद कराया।।

फागुन त्रयोदशी तिथि थी, मठ में धर्म-कथा हो रही थी,
अगले दिन शिवरात्रि भी थी, उसकी भी कथा श्रवण की।।

सायंकाल का समय हुआ तो, साहूकार ने छोड़ है दीन्हा,
अगले दिन रकम देने का, वचन भी उससे ले है लीन्हा।।

चतुर्दशी की प्रातः बेला, बहेलिया भी घर से निकला,
दक्षिण दिशा में एक गहन वन, पशु मारने कर गया गमन।।

पशु उसने एक न पाया, भूख-प्यास से वो कुम्हलाया,
जलाशय पर रात बिताने, का विचार उसने है बनाया।।

पास ही देखा बेल का पेड़ था, नीचे शिवलिंग स्थापित था,
मन में यही विचार हैं आये, रात यहीं बिताई जाये।।

रात्रि विश्राम की खातिर, चढ़ गया वो पेड़ के ऊपर,
अपने लिये स्थान बनाने, पत्ते फेंके तोड़-तोड़कर।।

बेल के पत्ते गिरने से, शिवलिंग पूरा ढंक गया,
दिन भर भूखा रहने से, शिवरात्रि का व्रत पूर्ण हुआ।।

एक पहर रात बीतने को आई, तभी वहाँ एक हिरणी आई,
हिरणी को देख बहेलिये ने, धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाई।।

देख हिरणी लगी काँपने, अपनी बात लगी वो कहने,
मेरा बच्चा होने को है, थोड़ी मोहलत दे दो मुझको।।

बच्चे को है जन्म देकर, तुरंत यहाँ मैं आ जाऊँगी,
और यदि मैं न आऊँ तो, भारी पाप में खुद पाऊँगी।।

हिरणी की जब बात सुनी तो, उसने बाण उतार लिया,
वापस आने की प्रतिज्ञा पर, हिरणी को तो छोड़ दिया।।

अन्य जानवर की प्रतीक्षा में, शिव-शिव वो रटने लगा,
अर्ध-रात्रि बीतने पर, दूसरी हिरणी का आगमन हुआ।।

हिरणी देख फिर बहेलिये ने, धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाई,
बोली हिरणी ऋतु निव्रत हूँ, कल आ जाऊँगी मैं भाई।।

कातर प्रार्थना सुन हिरणी की, उसका मन पिघल गया,
अगले दिन का वचन लेकर, उसको भी है छोड़ दिया।।

रात्रि के तीजे पहर फिर, पत्ते तोड़ फेंकने लगा,
अन्य जानवर की प्रतीक्षा में, शिव-शिव वो रटने लगा।।

तीन-चार बच्चों के संग में, एक हिरणी वहां है आई,
खुश होकर बहेलिये ने, धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाई।।

देख हिरणी लगी काँपने, बोली मैं एक बात बताऊँ,
बच्चों को वापस छोड़ के, अगले दिन मैं लौट आऊँ।।

इस बार भी देखो उसका, मन द्रवीभूत हो गया,
अगले दिन का वचन लेकर, हिरणी को जाने दिया।।

प्रातःकाल की शुभ बेला में, एक हिरण वहाँ पर आया,
देख उसको बहेलिये ने, धनुष पर है बाण चढ़ाया।।

सरलता से हिरण बोला, हे व्याध!एक बात बता दें,
तीनों हिरणियों को मारा यदि, तो फिर मुझको मार ही डालें।।

प्रेम भरे वचनों को सुनकर, बहेलिया द्रवीभूत हो जाई,
हिरणी वाली बात है पूरी, हिरण को कहकर सुनाई।।

बोला हिरण,तीनों हिरणीं, मेरी ही भार्या हैं,
मेरी ही खोज में देखो, इधर-उधर भटक रहीं हैं।।

आपने मुझको मार दिया तो, उनका उद्‌देश्य विफल होगा,
एक दिन की बस मोहलत दे दें, आपका बहुत उपकार होगा।।

शिवरात्रि के व्रत से उसका, हृदय शुद्‌ध हो गया,
हिरण की विनती को सुन, उसको भी जाने दिया।।

बहेलिये के उतरने से, कुछ और पत्ते झड़ गये,
नीचे रखे शिवलिंग पर, अपने आप चढ़ गये।।

शिवजी की कृपा बरसी, हृदय निर्मल हो गया,
अपने ही हिंसक कर्मों से, डर उसको लगने लगा।।

कुछ समय के बाद उसने, एक अचम्भा देखा भाई,
हिरण के संग में तीनों हिरणी, अपना वचन निभाती आईं।।

शुद्‌ध आत्मा हुआ बहेलिया, मारने से इंकार किया,
शिवजी की कृपा बरसी, सबको वापस भेज दिया।।

देख बहेलिया के कर्मों को, शिवजी ने ऐसा किया,
अपने धाम में बुलवाने को, एक विमान भेज दिया।।

दूजा विमान शिवजी ने, हिरण-हिरणीं को भेज दिया,
अपनी कृपा देखो बरसाकर, अपने धाम में बुला लिया"।।

इस व्रत की है इतनी महिमा, शिवजी की कृपा बरसती है,
मनोकामना पूरी होती, मोक्ष की प्राप्ति होती है।।

भाई-दूज की कथा

आओ-आओ एक बात सुनायें, भाई-दूज की कथा सुनायें,
कहती थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

सात बहन का एक था भाई, रहता था माई के संग,
सब बहनें ससुराल में, रहतीं अपने पति के संग।।

भाई-दूज का शुभ दिन आया, बेटा माँ के पास है आया,
बोला माई भाई-दूज है, मेरी कोई बहन नहीं है।।

माई बोली,बेटा सुन, तेरी तो हैं सात बहन,
छह बहनें हैं दूर गाँव में, पास है सबसे छोटी बहन।।

भाई तुरंत ही चला गया, छोटी के घर पहुंच गया,
बहिन द्वार पर पूजा करती, आस-ज्योति उसकी न लगती।।

पीछे पलट द्वार पर देखा, भैया खड़ा है उसको देखे,
बोली बहिन भाई तुम पलटो, फिर देखूं तुमको जी भर के।।

भाई को बैठा आसन पर, दौड़ी गई पड़ोसन के घर,
बोली क्या पकवान बनाऊं, प्यारा भैया आया घर।।

हास्य-विनोद पड़ोसन ठहरी, बोली सुन मेरी बात सखी री,
दूध में तुम पूड़ी पकाना, घी में चाँवल को तड़काना।।

बहन थी मन की बहुत ही भोली, देखो उसकी बात मान ली,
घी में चाँवल को डालकर, दूध में तो पूड़ी बना ली।।

चाँवल जलकर कोयला हो गये, पूड़ी तो फरा सी हो गईं,
फिर से दौड़ी पड़ोसन के घर, बोली सारी रसोई बिगड़ गई।।

सुन पड़ोसन उससे बोली, मन की है तू बहुत ही भोली,
घी में देखो पूड़ी पकाना, दूध-चाँवल की खीर बनाना।।

बहन ने खीर-पूड़ी बनाई, प्रेम से भैया को खिलाई,
बाद में फिर भाई बोला, अब मैं अपने गाँव को जाई।।

भाई से फिर बोली बहना, कलेवा लेकर तुम चले जाना,
तुरंत दौड़ रसोई में गई, आटा पीसने को लग गई।।

उल्टी-सीधी चक्की चलाई, नाग की माया है पिस जाई,
उसी आटा की पूड़ी बनाकर, भाई को वो देकर आई।।

खूब सवेरे उठ भुनसारे, भाई अपने गाँव चला रे,
बहिन ने पाछी एक पूड़ी तो, कुत्ते को फिर डाल आई रे।।

थोड़ी देर बाद ही देखा, कुत्ता तड़प के मर गया,
यह देखकर बहन का जी, आशंका से भर गया।।

मैं न जानू एक पूड़ी से, कुत्ते का ये हाल होगा,
मेरे भाई का तो जाने, अब कैसा हाल होगा।।

दौड़ी गई भैया के पास, बोली भैया सुनो एक बात,
कलेवा तो नहीं है जीमा, भैया बोला सुन मेरी बहना।।

कैसी बहना तू कहलाये, कलेवा में जी अटकाये,
बोली भैया क्रोध न कर तू, पहले मेरी बात सुन तू।।

रोते-रोते बात बताई, बोली इसी से दौड़ी आई,
एक पूड़ी से कुत्ता मरता, तेरा तो क्या हाल है होता।।

भैया बोला प्यारी बहना, कब तक तू मुझे बचायेगी,
जगह-जगह हैं अलफें मेरी, कब तक तू रक्षा करेगी।।

बोली भैया संग चलूंगी, माई के पास रह लूँगी,
भैया ने की आनाकानी, किन्तु बहन ने एक न मानी।।

बहन अपने भाई के संग, गाँव को चलने लगी,
थोड़ी दूर चलकर ही, बोली भैया प्यास लगी।।

भाई बोला इसीलिये मैं, कर रहा था आनाकानी,
बीच जंगल कहाँ मैं खोजूं, तेरे पीने के लिये पानी।।

दूर कहीं से फिर है देखो, ठुक-ठुक की आवाजआई,
दोनों ही पहुंचे वहां पर, जहां से आवाज है आई।।

देखा एक बढ़ई वहां पर, सेही के काँटे बटोर रहा,
बहिन ने फिर उससे पूछा, भाई तू क्यों बटोर रहा।।

बढ़ई बोला सुनो बहन, मैं तुमको एक बात बताता,
सात बहनों का भाई जो होता, उसका जीवन संकट में होता।।

बहन बोली सुनो भाई, हम सात बहनों का एक भाई,
मुझको तुम उपाय बताओ, जिससे रक्षा उसकी हो जाई।।

भाई की बारात में, द्वार भी गिरने लगेगा,
सोने की ईंट फँसाने से, द्वार भी फिर नहीं गिरेगा।।

बीच रास्ते में फिर देखो, शेर दहाड़ते आयेगा,
हरे जौ का पूरा डालते ही, वह भी भाग जायेगा।।

ठीक भाँवरों के समय, दूल्हा बेहोश हो जायेगा,
काँटे पीसकर पिलाने से, वह ठीक हो जायेगा।।

बहन ने तीन काँटे बटोरकर, आँचल में है खोंस लिये,
पास में थी एक बावली, दोनों पानी पीकर चल दिये।

चलते-चलते बहन फिर, गालियाँ देने लगी,
भाई कुछ समझ न पाया, ऐसा क्यों करने लगी।।

गाली देते-देते बहन, घर को फिर पहूंच गई,
माई ने इस हाल में देखा, बेटे से कहने लगीं।।

पागल बहन को क्यों ले आये, गले आफत बाँध के लाये,
बेटा बोला सुनो माई, राह का सब हाल बताई।।

कुछ समय के बाद ही, भाई की शादी तय हूई,
और फिर तो ब्याह की, तैयारी होने लगी।।

बहन बोली सारे दस्तूर, पहले मेरे ही होंगे,
बाद में फिर भैया के, सारे दस्तूर पूरे होंगे।।

सब बोले ये है पागल, जैसा कहे वैसा करो,
सबसे पहले सारे नेंग, इसके ही पूरे करो।।

फिर बरात हुई रवाना, राह में देखो शेर मिला,
जौ का पूरा डालते ही, वह वहां से भाग गया।।

द्वारचार के समय भी देखो, द्वार तो गिरने लगा,
सोने की ईंट खोंस दी, द्वार स्थिर हो गया।।

जयमाल के बाद फिर, बहन जाकर सो गई,
रात में फिर भाई की, भाँवरे पड़ने लगीं।।

बीच भाँवरों में ही फिर, भाई बेहोश होने लगा,
सब दौड़े बहन को जगाने, ऐसा क्या उसने किया।।

झटपट आकर बहन ने फिर, से ही के कांटे पीस लिये,
पानी में उनको घोलकर, भाई को है पिला दिये।।

उसको पीते ही तुरंत, भाई उठकर बैठ गया,
और फिर ब्याह भी, निर्विघ्न सम्पन्न हो गया।।

हुई विदा,बेटे-बहू फिर, घर को हैं आ गये,
आँगन में फिर धूम मची, मंगल-गान गवने लगे।।

रात हुई सब लोग तो, थककर जाकर सो गये,
भाई पर था संकट भारी, आखिर बहन कैसे सोये।।

भाई-भावज के बीच में, बहन जाकर पड़ रही,
जानबूझकर आंख मूंदकर, सोने का बहाना करने लगी।।

रात में उठकर देखा तो, कुछ आवाज आ रही थी,
भाई के डंसने को देखो, काली नागिन आ रही थी।।

बहिन ने तुरंत उठकर, नागिन को है काट दिया,
उसको एक मटके में रख, कोने में है गड़ा दिया।।

उसके बाद बहन जाकर, शांति से फिर सो गई,
और फिर सुबह उठकर, गाना वो गाने लगी।।

सब मन में लगे सोचने, ऐसा वो क्यों कर रही,
कल तक जो गाली देती थी, आज गाना गा रही।।

मेहमानों की विदाई का, समय भी फिर आ गया,
सबके लिये भेंट लाने, भाई बाजार जाने लगा।।

माई बोली बेटे से फिर, एक बात सुनते जाना,
सबके लिये लहँगा लाना, बहन को छींट का कपड़ा लाना।।

भाई जब बाजार गया तो, माई की बात याद आई,
छींट का कपड़ा एक न मिला, सारे लंहगे ही मिल पाई।।

घर आकर के बेटे ने फिर, सारी बात माई को बताई,
यह सुनकर के छोटी बहना, दौड़कर के वहाँ पे आई।।

माई से फिर बोली बहना, मैं तो कुछ भी चाहूं भी न,
न चाहूं मैं छींट-छिमरिया, और न कोई दौलत गहना।।

फिर दौड़ कमरे में गई, मटकी वो उठा लाई,
मरी नागिन सबको दिखाकर, फूट-फूट रोने लगी।।

बहिन बोली सुनो माई, सात बहिन का वीर था,
उस पर तो भारी संकट था, इसीलिये ये स्वांग रचा था।।

माई का प्यारा पूत रहे, हम बहिनों का वीर रहे,
भाभी का अखंड सुहाग रहे, मेरा आशीष बना रहे।।

हे दूजमाता मेरी बस, इतनी विनती सुनते रहना,
मेरे वीर की रक्षा कीन्ही, सबके वीर की रक्षा करना।।

गणगौर की कथा

आओ-आओ एक बात बतायें, गणगौर की कथा सुनायें,
कहती थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

शिव-गौरा मैया की कथा है, इसकी इतनी महत्ता है,
जो भी इसको सुनता है, सुख-सौभाग्य पाता है।।

एक बार शिवजी को देख़ो, भ्रमण करने का मन हूआ,
और फिर उन्होंने तो, मृत्यु लोक का विचार किया।।

मृत्यु लोक को चल दिये शिवजी, उनके पीछे गौरा भी,
संग नादिया भ्रमण करन को, चलन लगे वे जल्दी भी।।

उनको देख के सब लोग बोले, इतनी सुंदर स्त्री है,
उसको पैदल ले जा रहे, संग में देखो नंदी है।।

लोगों की बातों को सुनकर, गौरा नंदी पर बैठ गईं,
शिवजी पैदल चल रहे, मन ही मन सकुचा रहीं।।

गौरा को नंदी पर देखकर, लोग फिर कहने लगे,
इतनी छोटी नंदी पर बैठी, बूढ़े बाबा पैदल चल रहे।।

लोगों की बातों को सुनकर, शिवजी फिर सोचने लगे,
गौरा जी नीचे उतर गईं, शिवजी नंदी पर बैठ गये।।

कुछ दूर चलने पर ही, कुछ लोग कहने लगे,
इतने बड़े नंदी पर बैठे, स्त्री को पैदल चला रहे।।

उनकी बातें सुनकर तो, गौरा नंदी पर बैठ गईं,
और फिर मृत्यु लोक का, भ्रमण वे करने लगीं।।

कुछ ही दूर चलने पर तो, और लोग मिल गये,
कहने लगे बूढ़े नंदी पर, देखो दो लोग बैठ गये।।

लोगों की फिर बातें सुनकर, दोनों नंदी से उतर गये,
बोले शिवजी मृत्यु लोक है, सब लोग कुछ-कुछ कह गये।।

चलते-चलते गौरा-शिवजी, एक गाँव में पहुंच गये,
भोजन बनाने के लिये, जगह तलाशने लगे।।

टूटी ईंटें देखकर, गौराजी ने चूल्हा बना लिया,
और फिर स्नान करने, नदी की ओर चल दिया।।

गौरा जी ने जैसे ही, जल से पहली अंजुल भरी,
उनके हाथ में देखो तो, आम की बौरें आ गईं।।

दूजी अंजुल के भरते ही, टेसू के फूल आ गये,
तीसरी में जवा की बाल, और बेलपत्री आ गये।।

गौरा जी भी लगीं सोचने, आज कोई त्योहार है,
और फिर याद आया कि, आज गणगौर का त्योहार है।।

स्नान करके गौरा जी, आम के पेड़ के नीचे बैठ गईं,
शिव-बाबा के भोजन की, तैयारी वो करने लगीं।।

गाँव में है खबर पहुँच गई, शिव -पार्वती आये हैं,
आम के पेड़ के नीचे, साथ में आसन जमाये हैं।।

छोटे कुल की स्त्रियां, तुरंत दौड़कर पहुँच गईं,
शिव-पार्वती जी का वो, पूजन-अर्चन करने लगीं।।

उनकी पत्र-पुष्प पूजा को, गौरा जी ने अंगीकार किया,
और उनके ऊपर संपूर्ण, सुहाग-रस छिड़क दिया।।

शीश नवाकर गौरी जी को, उनका आशीष प्राप्त किया,
और अटल सौभाग्य पाकर, घर की ओर प्रस्थान किया।।

फिर उच्च कुल की स्त्रियां भी, सोलह-श्रृंगार करके आ गईं,
नाना प्रकार के व्यंजन वो, बनाकर भी ले आ गईं।।

सोने-चांदी के थालों में, पूजन-सामग्री सजा लाई,
नाना प्रकार के व्यंजन से, पूजन वो करने लगीं।।

उनको देखकर शिवजी ने, गौराजी से फिर कहा,
सुहाग-रस पूरा छिड़क दिया, अब इनके लिये क्या बचा।।

पार्वती जी बोली स्वामी, चिंता की कोई बात नहीं,
इनकी पूजा अंगीकार करके, इनको भी सुहाग दूँगी।।

ऊपरी पदार्थों से निर्मित, सुहाग रस उन पर छिड़का है,
इसलिये उनको सुहाग भी, केवल धोती(साड़ी) से दिया है।।

फिर से गौरा जी हैं बोलीं, स्वामी जी एक बात बताऊं,
इन स्त्रियों के ऊपर मैं, अपना सुहाग-रस लुटाऊँ।।

मैं अपनी उंगली चीरकर, रक्त का सुहाग-रस दे दूँगी,
जिसके भाग में ये रहेगा, तन-मन से सुहागवती होंगी।।

उच्च-कुल की स्त्रियों ने, पूजन जब कर लिया,
गौराजी ने उँगली चीरकर, रक्त उन पर छिड़क दिया।।

बोलीं गौरा जिस के भाग में, मेरा यह सुहाग-रस पड़ेगा,
उस स्त्री का मेरे जैसा, सुख-सौभाग्य बना रहेगा।।

इस व्रत की इतनी महिमा है, कोई वर्णन नहीं कर सकता,
जो भी इसको करता है, अटल सौभाग्य पता है।।

पिपरदशा भाग-1

(दशारानी का व्रत)

आओ-आओ एक बात बतायें, पिपरदशा की कथा सुनायें,
कहतीं थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

एक गांव में एक बुढ़िया, लड़के-बहू संग थी रहती,
लड़का उसका विदेश में था, एक दिन बहू से यूं बोली।।

किसी के घर से आग लाकर, भोजन तुम बनाओ जल्दी,
गांव में दशा रानी की पूजा थी, उसको आग कहीं ना मिली।।

सास शाम को गई गांव में, सबने आदर से बैठाया,
सुबह पूजा नहीं हुई थी, ऐसा कारण है बताया।।

सास घर आकर बहू से, व्रत करने कहने लगी,
बीस फरा बनाकर दोनों, पारण करने बैठ गईं।।

उसी समय बुढ़िया का लड़का, विदेश से हीआ गया,
दरवाजे पर खड़ा होकर, आवाज भी लगाने लगा।।

माँ तो मन ही मन में बोली, क्या हर्ज है जरा रहने दो,
मैं पारण जब कर चुकूँगी, तब दरवाजा खोल दूंगी।।

बहू में देखो रुकने का, साहस भी तो नहीं हुआ,
थाली का अन्न इधर-उधर कर, दरवाजा भी खोल दिया।।

पति बोला मां को बुलाओ, वही जल ले आयेगी,
बारह वर्ष में बाहर रहा, तू न जाने कहां रही।।

पारण करके मां फिर आई, बेटे को भीतर ले गई,
लड़के ने सादर पैर छुए, उसे आशीष देने लगी।।

माता ने थाली परोसी, बेटा भोजन करने बैठ गया,
प्रथम ग्रास तोड़ा ही उसने, अचानक यह होने लगा।।

फरों के टुकड़े जो बहू ने, इधर-उधर थे कर दिये,
आप ही उचक-उचक कर, उसके सामने आने लगे।।

बेटे ने मां से फिर पूछा, ये सब क्या है तू बता दे,
मां बोली मैं क्या जानूँ, यह सब तेरी बहू ही जाने।।

लड़का क्रोध में भरकर बोला, ऐसी बहू मेरे क्या काम की,
बारह वर्ष के बाद है देखो, जिस के चरित्र की तू साक्षी नहीं।।

घर से इसको निकाल कर, बाहर करो अभी के अभी,
और यदि यह घर में रहेगी, तो मैं घर में रहूंगा नहीं।।

व्रत के पारण का हाल बताकर, माता उसे समझाने लगी,
लेकिन उसको तो बहू को, बाहर करने की जिद पड़ी।।

ओसारे के नीचे खड़े होने का, सास ने बहू को बोल दिया,
बहू के नीचे खड़े होते ही, ओसारा बोलने लगा।।

छप्पर का इतना भार नहीं, जितना मुझको तेरा है,
इस व्रत के विरोधी को कोई, छाया भी नहीं देता है।।

वहां से चलकर बहू तो, घिनोची के पास खड़ी हो गई,
घड़े से ज्यादा तेरा भार है, घिनोची भी कहने लगी।।

उसके बाद बहू तो जाकर, कूड़े के पास खड़ी हो गई,
उसके भारी कहने पर वह, अत्यंत दुखी हृदय हो गई।।

आखिर बहू दुखी होकर फिर, जंगल की ओर चली गई,
भूखी-प्यासी फिरती-फिरती, अंधकूप में गिर गई।।

उसी समय राजा नल देखो, शिकार खेल कर आ रहे थे,
कुछ लोग तो बिछड़ गए थे, राजा प्यास से व्याकुल हो रहे थे।।

राजा नल के भाई ने देखो, कुंये में लोटा डाल दिया,
नीचे बैठी बहू ने उसको, जोर से है पकड़ लिया।।

भाई फिर राजा से बोले, किसी ने लोटा पकड़ लिया,
राजा नल ने कुएं के पास, जाकर ऐसा बोल दिया।।

यदि तुम कोई पुरुष हो तो, मेरे धर्म भाई होगे,
और यदि कोई स्त्री हूई तो, धर्म बहन भी तुम होगी।।

स्त्री के आवाज देने पर, राजा ने उसको निकलवा लिया,
हाथी पर बैठाकर उसको, महल की ओर प्रस्थान किया।।

रानी को ये खबर मिली कि, राजा के संग स्त्री है,
मन ही मन में दुखी हो गई, और यह बोलने लगी।।

बोली राजा क्या गलती थी, दूजी रानी ले आए,
राजाजी हंसकर के बोले, सौत नहीं ननद लाये।।

उसके साथ सगी बहन का, व्यवहार करने को बोल दिया,
यह सुनते ही रानी का मन, प्रसन्नता से भर गया।।

रानी बोली ननद का सुख तो, मैं कभी ले ना पाई,
अच्छा हूआ जो मेरे भाग्य से, तुम यहां चली आई।।

राजा ने उसका नाम तो, मुंहबोली बहन रख दिया,
और उसके लिए फिर, अलग महल बनवा दिया।।

एक दिन राजा की घोड़ी ने, पहले बछेड़े को जन्म दिया,
उसकी बधाई सुनकर तो, बहन ने यह फैसला लिया।।

रानी के पास है जाकर, उससे व्रत करने को कहा,
रानी के पूछने पर बोली, घोड़ी ने पहला बछेड़ा दिया।।

भाई की पहली घोड़ी ब्याई, इसीलिए मैं कह रही,
और फिर पारण का वह, महत्व भी समझाने लगी।।

सुनकर रानी ननद से बोली, ऐसा व्रत मैं क्यों करूं,
दूध-पूड़ी की खाने वाली, पानी के फरे क्यों खाऊं।।

ननद बोली सुनो भाभी, व्रत के लिये ऐसा न बोलो,
इसी के कारण मेरी तो, जो दशा हो रही वह देख लो।।

श्रद्धा पूर्वक ननद ने फिर, इस व्रत को पूर्ण किया,
आटे के दस फरा बनाकर, थाली में उनको परोस लिया।।

उसी समय उसके पति को, अनायास कुछ प्रेरणा हुई,
अपनी माता से फिर देखो, बाहर जाने की आज्ञा ली।।

इधर -उधर घूमते फिरते, राजा नल के देश पहुंच गया,
और अपनी पत्नी का वह, घूमकर पता लगाने लगा।।

कुएँ के पास कुछ औरतें, उसकी स्त्री की बात कर रही,
राजा जी की मुंह बोली बहन के, गुणों का बखान कर रही।।

सुंदर, सुशील, धर्मात्मा, उसी का किया है सब होता,
सदाव्रत भी ऐसा खोलें, सब कोई मन की भिक्षा है पाता।।

सबकी बातें सुनकर उसने, साधु का भेष बना लिया,
राजा की मुंहबोली बहन के, द्वार पर वह पहुंच गया।।

उसकी आवाज सुनकर तो, सेवक भिक्षा देने लगे,
किंतु वह तो उनसे ही, ऐसे वचन कहने लगे।।

सुनो सेवको तुम ध्यान से, मेरी एक ही बात सुनो,
सदाव्रत खोलने वाली से, भिक्षा देने को कहो।।

दास बोले अभी तो वे, व्रत का पारण कर रही,
जब पूर्ण हो जायेंगी, तब आकर भिक्षा दे देंगी।।

उसके बाद बहन तो देखो, मुट्ठी भर मोती लाई,
पति को पहचान कर के, मुस्काती हुई लौट गई।।

रानी बोली सुनो ननद तुम, जब से यहां पर आई हो,
आज पहली बार मुस्काई, इसका तो कारण कहो।।

इस साधु को देखकर, हंसने का क्या कारण है,
बहन बोली वह साधु तो, तुम्हारे घर का मेहमान है।।

रानी बोली वह ऐसे ही, इधर पर क्यों आये हैं,
बहन बोली मेरा वो, पता लगाने को आये हैं।।

रानी ने राजा को बताया, राजा जी कहने लगे,
अपनी हैसियत से वह आये, मेरी बहन को ले जाये।।

वह विदेशी देखो अपने, घर को वापस आ गया,
और अपनी माता से, बहू का गुणगान करने लगा।।

माता ने फिर आज्ञा दी, अपने संग ले आना,
किंतु साथ में अपने तुम, डोली-कहार ले जाना।।

राजा ने समधी की हैसियत से, उसकी खूब आवभगत भी की,
और फिर विधि पूर्वक, बहन की विदाई भी की।।

महल से बाहर निकल कर, बहन जब चलने लगी,
राज महल और शान-शौकत, उसके पीछे चलने लगी।।

रानी बोली सुनो ननद जी, देखो तो यह क्या हुआ,
बहन ने ज्योंही मुड़कर देखा, सारा वैभव लुप्त हो गया।।

फिर दोनों पति पत्नी, प्रेम से रहने लगे,
यहां राजा नल और रानी, कमरी-कथरी ओढ़ फिरने लगे।।

राजा-रानी महल से निकलकर, जंगल में घूमने लगे,
घूमते-घूमते वे फिर दोनों, एक गांव में पहुंच गए।।

वहां पर तो बड़े-बड़े, बेर के पेड़ लगे हुए,
राजा-रानी दोनों भूखे, नीचे पड़े बेर बीनने लगे।।

उनके छूते ही वे बेर, लोहे के होने लगे,
और उनको छोड़कर फिर, राजा आगे बढ़ गये।।

आगे कुछ किसानों ने, अनाज की दो मुठ्ठी बालें दीं,
किन्तु उनके भूनते ही, कंकड़ उनसे झड़ने लगे।।

आगे एक बनिये ने, सेर भर आटा दिया,
रानी भोजन बनाने लगीं, राजा ने स्नान को चल दिया।।

पिपरदशा भाग-2

(दशारानी का व्रत)

उसी नदी के मछुआरे ने, कुछ मछलियां भेंट में दी,
रानी ने रोटी बनाकर, मछलियां भून कर रखीं।।

भोजन करने बैठे तो, रोटी ईंट की हो गईं,
और वह मछलियां भी, उचककर नदी में चली गईं।।

चलते-चलते राजा अपनी, बहन के यहां पहूंच गये,
बहन को है खबर मिली, भाई-भोजाई आ गये।।

बहन ने स्त्रियों से पूछा, कब और कैसे हैं आये,
"लटके चीथरा भूखें कूकरा", ऐसे आये और कैसे आये।।

यह सुनकर बहन को तो, बहुत ही लज्जा है आई,
कुम्हार के यहां ठहराकर, शाम को मिलने को आई।।

थाल को सजा कर लाई, भावज को देने लगी,
चक्के के नीचे ही रख दो, भावज ऐसा कहने लगी।।

थाल का सामान रखकर, बहन वापस चली गई,
राजा ने रानी से पूछा, बहन क्या देकर गई।।

भावज बोली जो भी लाई, चक्के के नीचे रख दिया,
तुम ही खोल कर अब देखो, बहन ने है क्या दिया।।

राजा ने देखा वहां तो, कंकड़-पत्थर का ढेर था,
राजा जी सब समझ गए, मेरी कुदशा के कारण था।।

वहां से निकलकर राजा, एक मित्र के घर गये,
मित्र ने सेवकों से पूछा, किस दशा में वे आये।।

बोले सेवक उनके तो, देखो तो यह हाल हैं,
"कमरी ओढ़ें-कथरी बिछावें, मांग-मांग कर भिक्षा खावें।।

ऐसी बातें सुनकर मित्र, बहुत दुखी हो गये,
उनको महल में लाने की, आज्ञा भी देने लगे।।

राजा-रानी दोनों फिर, मित्र के महल में रुक गए,
उनके सोने के लिए मित्र ने, पलंग भी बिछवा दिये।।

उसी कमरे की दीवार पर, नौलखा हार टंगा था,
और पलंग की पाटी पर, बिजुरिया खाड़ा भी रखा था।।

रात हुई राजा जी सो गए, रानी पैर दबा रही थीं,
देखा हार के पास चित्रित, मोर हार निगल रही थी।।

बिजुरिया खाड़ा भी देखो तो, पलंग की पाटी में समा रहा,
यह दृश्य देख रानी ने, राजा को है जगा दिया।।

राजा बोले रानी यहाँ से, अभी ही हम चल चलेंगे,
नहीं तो फिर सुबह होने पर, हम क्या मुंह दिखलाएंगे।।

राजा-रानी चलते चलते, दूसरे राज्य में पहुंच गये,
वहां पर तो सदाव्रत के, देखो खूब क्षेत्र खुले।।

राजा-रानी पहुंचे तो, सदाव्रत देखो बंद हुआ,
लोग बोले कैसे अभागे, देने को कुछ भी न बचा।।

मुट्ठी-मुट्ठी चना देने की, बात वह करने लगे,
सुनकर राजा-रानी वहां के, प्रधान की निंदा करने लगे।।

निंदा भरी बातें सुनकर, प्रधान को क्रोध आ गया,
और उसने उन दोनों को, कैद में डलवा दिया।।

जिस कोठरी में राजा-रानी, दोनों ही कैद थे,
सामने था एक आम रास्ता, सब वहां से निकलते थे।।

एक मेहतरानी रोज, उसी राह से है निकलती,
रानी उसको आते-जाते, देखो रोज ही देखतीं।

एक दिन देर से वह निकली, रानी ने कारण है पूछा,
बोली राजा की घोड़ी ने, पहला बछेड़ा जन्म दिया।।

उसी की टहल में देखो, इतनी देर हो गई,
यह सुनते ही रानी तो, राजा नल से कहने लगीं।।

म्हारी बहन के व्रत का देखो, एक बार अनादर किया,
और उसके कारण ही, हम दोनों का ये हाल हुआ।।

आओ हम तुम दोनों अब, दशारानी का व्रत करेंगे,
राजा बोले पूजन सामग्री, हम कहां से लाएंगे।।

रानी बोली मां दशारानी, वही सब ठीक करेंगी,
अब जो होगा वही जानें, हम तो अब व्रत करेंगी।।

नौ तार राजा की पाग के, एक आंचल का ले लिया,
और उनका गड़ा बनाकर, व्रत का भी संकल्प लिया।।

थोड़ी देर में राजा जी, बछेड़ा देखने को निकले,
राजाऔर रानी को देखकर, उनके बारे में पूछने लगे।।

सेवक बोले यह दोनों तो, भिक्षा लेने आए थे,
आशीष के बदले निंदा की, इसलिये यहां कैद किये।।

राजा बोले यह तो इनका, कोई अपराध है ही नहीं,
मन की भिक्षा नहीं मिली, तो ही बुराई की होगी।।

राजा नल और रानी को, कैद से निकलवा दिया,
पांव में पद्म ,माथे पर चंद, देखकर ही पहचान लिया।।

राजा नल और दमयंती हैं, यह सबको बताने लगे,
और संग में देखो उनसे, क्षमा याचना करने लगे।।

खूब आदर-सत्कार करके, बेशकीमती भेंट दिए,
और फिर वहां से निकलकर, मित्र के यहां पहुंच गये।।

उनके आने की खबर सुन, मित्र तो खूब खुश हुये,
कैसे और किस हाल में आये, सेवकों से पूछने लगे।।

बोले सेवक अब तो देखो, ठाठ-बाट से आए हैं,
हाथी-घोड़ा, पालकी, पीनस, फ़ौज भी संग में लाये हैं।।

मित्र ने इस बार भी देखो, उसी महल में डेरा दिया,
राजा जी के सो जाने पर, रात में फिर यह हुआ।।

रात में रानी राजा जी के, फिर से पैर दबा रहीं थीं,
और वह चित्रित मोर, नौलखा हार उगल रही थी।।

और वह खांड़ा भी देखो, पाट से बाहर निकल रहा,
यह दृश्य देख रानी ने, राजा को है जगा दिया।।

राजा ने मित्र को बुला, सारा चरित्र है दिखाया,
मित्र बोला चोरी का आरोप, मैंने कभी भी न लगाया।।

वहां से निकल कर दोनों, बहन के हैं घर गये,
बहन ने सबसे है पूंछा, किस हाल में वे आये।।

सब बोले अबकी बार तो, राजा के जैसे आये,
बहन बोली मेरे महल में, सादर उनको लाया जाये।।

रानी बोलीं बहन के घर, मैं तो न जाऊँगी
मैं तो उसी कुम्हार के, घर में जाकर ठहरूँगी।।

अपनी जिद पर गुस्से में, कुम्हार के घर चली गई,
शाम को फिर बहन भी, थाल लेकर आ गई।।

उसे देखकर भावज बोली, खाओ रे! मेरे सोने रूपे के गहने खाओ,
हम भूखे-नंगे क्या खायेंगे, अपने थाल वापस ले जाओ।

ननद बोली यह ठिठोली, मुझ पर क्यों कसती हो,
मैं तो अभी जो लाई हूं, पहले भी वही थी लाई।।

चक्के को उठाकर देखा, हीरा-मोती का ढेर लगा,
देखकर रानी सन्न रह गई, मेरी कुदशा के कारण था।।

रानी ने ननद को फिर, खूब सामान भेंट दिया,
किंतु पूजा में आने का, उसको न्योता नहीं दिया।।

वापस लौटे राह में, भोजन की तैयारी की,
मछलियां आपही वापस आ गई, थाली में रोटियां गिरने लगी।।

कुदशा के कारण उस दिन, ईंट की हो गई थीं,
मरी मछलियां अपने आप, नदी में चली गई थीं।।

आगे चले किसानों ने फिर, भूंज के होरे भी खिलाये,
लोहे के बेर असली हो गये, वे भी दोनों ने है खाये।।

राजा नल बड़ी शान से, अपने राज्य को पहुंच गये,
प्रजाजन पहचान कर उनको, महल में हैं ले गये।।

रानी ने महल में जाकर, दशारानी का पूजन किया,
किंतु उनकी पूजा का कलश, जलाये भी नहीं जला।।

खूब सोच के पंडित बोले, कोई न्योता पाने से रह गया,
स्मरण करके उसे बुलाओ, तो दीपक भी जल जायेगा।।

रानी बोलीं बहन को बस, मैंने न्योता नहीं दिया,
राजा ने द्रुतगामी रथ भेज, उसको भी बुलवा लिया।।

उसने कलश की ज्योति, जलाई, धूमधाम से पूजा हुई,
सुहागिनों को भोजन करा, उनकी उचित विदाई दी।।

राजा नल प्रजा से बोले, दशारानी का सब व्रत करें,
जैसे दिन मेरे हैं फेरे, वैसे ही सबके फेरें।।

शीतलाष्टमी

आओ-आओ एक बात सुनायें, शीतलाष्टमी की कथा सुनायें,
कहतीं थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

एक गांव में एक थी माई, और उसकी दो बहुयें थीं,
वे तीनों ही एक साथ में, एक ही घर में रहतीं थीं।।

एक बार बड़ी बहू के, पुत्र को माता निकल आईं,
यह देख माई देवी का, पूजन-पाठ करने लगीं।।

बड़ी बहू ने भी तो देखो, ऐसा ही है काम किया,
कुछ तला भूना ही नहीं, और न गरम खाना खाया।।

देवी मां की कृपा भी, उन सब पर बरस गई,
और कुछ ही दिन में देखो, पुत्र की तबीयत ठीक हो गई।।

कुछ दिनों के बाद ही देखो, अचानक ऐसा हुआ भाई,
छोटी बहू के पुत्र को, माता भी निकल आई।।

घर पर अकेला होने पर, छोटी बहू ने ऐसा किया,
खूब तला-भुना बनाकर, गरम रोटी का सेवन किया।।

गरम-गरम माड़े बनाकर, दूध के संग में हैं खाये,
तले-भुने व्यंजन बनाकर, वे भी देखो खूब खाये।।

इस बार भी माई ने फिर, खूब पूजा-पाठ किया,
किंतु उसका नाती तो, देखो ठीक नहीं हुआ।।

छोटी बहू माई को फिर, खूब उलाहना देने लगी,
मेरे पुत्र के समय में, ढंग से पूजा नहीं की।।

माई तो फिर दुखी होकर, देवी के पास पहुंच गई,
बोली मैया आप ही बोलो, मुझसे क्या भूल हुई।।

देवी ने फिर प्रकट होकर, माई को है बात बताई,
छोटी बहू ने क्या किया, पूरी उसकी करतूत बताई।।

बहू की तरफ से माई, माफी भी मांगने लगी,
घर जाकर छोटी बहू को, डांट-फटकारने लगी।।

छोटी बहू भी फिर देखो, देवी के चरणों में गिर पड़ी,
पुत्र को ठीक करने की, गुहार वो करने लगी।।

यह सुनकर देवी जी ने, बहू को माफ कर दिया,
अपनी कृपा बरसा करके, पुत्र को ठीक कर दिया।।

उस दिन से सब लोग तो, शीतलाष्टमी मनाने लगे,
ठंडा भोजन खाने लगे, नोनिया,नोरपा की क्यारी लगाने लगे।।

हे शीतला माता मेरी, हरदम दया आप रखना,
अपनी कृपा बरसा करके, सबकी रक्षा भी करना।।

बारह जोत

(आसमाई का पूजन)

एक समय की बात सुनाऊँ, बारहजीत की कथा सुनाऊँ,
कहतीं थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

एक थे राजा एक थी रानी, उनकी न थी कोई निशानी,
बच्चे की उम्मीद न थी, मायूसी सी छाई थी।।

जप-तप कीन्हे खूब हजार, प्रभु की कृपा छाई अपार,
सुंदर सा एक बालक जन्मा, लाड़-प्यार से बड़ा है कीन्हा।।

लाड़-प्यार की हुई अधिकता, राजकुंवर जी इतने बिगड़े,
पनिहारिन की मटकी फोड़ें, राह चलत गुलेल हैं छोड़ें।।

प्रजा भी थी खूब हताश, पहुँच गई राजा के पास,
सारी बात है कह सुनाई, कुँवर जी की शिकायत लगाई।।

बोले राजा सब पनिहारिन, धातु के मटके ले जायें,
ताकि अब राजकुँवर जी, उन्हें फोड़ने ही न पायें।।

अब देखो सब पनिहारिन, धातु के घट लाने लगीं,
किन्तु राजकुंवर ने भी, नई तरकीब निकाल ली।।

लोहे की गुलेल बनाई, शीशे के छर्रे बना लिये,
और उनसे अब वे सबके, धातु के घट फोड़ने लगे।।

प्रजाजन फिर से तो देखो, राजा के पास पहुँच गये,
फिर से राजकुंवर की वे सब, शिकायत भी करने लगे।।

राजाजी फिर लगे सोचने, कुंवर दूसरा हो जायेगा,
किन्तु प्रजा भाग गई तो, राज्य कहाँ से फिर आयेगा।।

एक दिन राजकुंवर जी जब, शिकार खेलने गये हुए,
राजाजी ने फरमान लिखकर, ड्योढ़ी पर टंगवा दिये।।

राजकुंवर को देश निकाला, राजाजी ने दे दिया,
प्रजाजन की शिकायत पर, देखो ये फैसला लिया।।

वापस आकर राजकुंवर जी, फरमान को पढ़ लिये,
उल्टे पैर तुरंत वो तो, राज्य से बाहर निकल गये।।

चलते-चलते राजकुंवर जी, एक गांव में पहुंच गये,
अपने रहने के लिये, स्थान तलाशने लगे।।

अचानक घोड़े का चाबुक, देखो नीचे गिर गया,
राजकुंवर ने नीचे झुककर, उसको तो उठा लिया।।

वहाँ खड़ीं थीं चार बुढियाँ, सोचें हमें प्रणाम किया,
कुँवर से है प्रश्न पूछतीं, तुमने किसे सलाम किया।।

कुंवर जी बोले तुम सबमें, जो भी सबसे बड़ी है माई
उन्हीं को प्रणाम किया, अब आशीष दे दो माई।।

चारों बुढियाँ फिर से बोलीं, उत्तर न्याय संगत नहीं
किसको है प्रणाम किया, अब तो बतलाओ जल्दी।।

कुंवर जी उनसे हैं बोले, पहले अपना परिचय दो,
किसको मैंने प्रणाम किया, उसके बारे में जान लो।।

पहली बोली भूख माई हूँ, क्या मुझको प्रणाम किया,
कुंवर जी बोले नहीं माई, तुमको नहीं प्रणाम किया।।

तुम्हारी दशा सदा तो, एक सी रहती नहीं,
जो भूख व्यंजन से मिटती, सूखी रोटी से भी मिटती वही।।

दूजी बोली प्यास माई मैं, क्या मुझको प्रणाम किया,
कुंवर जी फिर से हैं बोले, तुमको माई नहीं किया।।

तुम्हारी भी वही स्थिति, एक सी रहती नहीं,
गंगाजल से प्यास है बुझती, गंदे जल से बुझती वही।।

तीसरी बोली नींद माई मैं, क्या मुझको प्रणाम किया,
कुंवर जी बोले सुनो माई, तुम्हें नहीं प्रणाम किया।।

तुम्हारी भी दशा वही है, सदा एक सी रहती नहीं,
बिछौने पर नींद है आती, धरती पर भी आती वही।।

चौथी बोली आस माई मैं, क्या मुझको प्रणाम किया,
सुनकर राजकुंवर जी बोले, हाँ तुमको प्रणाम किया।।

ये तीनो ही मानव को तो, विकल कर देने वाली हैं,
आप विकलता का नाश करके, शाँति देने वालीं हैं।।

इसी कारण से ही मैंने, आपको प्रणाम किया,
राजकुंवर के उत्तर ने तो, चारों को खुश कर दिया।।

कुंवर जी को चारों ने फिर, चार-चार कौंडियाँ दी,
और आशीष देकर कहा, हर जगह तुम्हारी जीत होगी।।

जब तक तुम्हारे पास रहेंगी, ये सारी कौंडियाँ,
जिस काम में हाथ रखोगे, प्राप्त करोगे सिद्धियां।।

कुछ देर के बाद कुंवर जी, दूसरे राज्य में पहुंच गये,
घोड़े को प्यास लगी थी, नदी किनारे रुक गये।।

इस राज्य के राजाजी का, धोबी बड़ा जुआड़ी था,
उस समय राजा के कपड़े, नदी किनारे धो रहा था।।

कुंवर जी से पूछे धोबी, आप यहाँ क्यों आये हैं
कुंवर जी बोले घोड़े को हम, पानी पिलाने आये हैं।।

बोला धोबी पहले तुम, दो-दो हाथ खेल लो,
जीत गये तो राजाजी के, पूरे कपड़े तुम ले लो।।

हार जाओ तो कोई बात नहीं, चिंता कुछ भी न करना,
घोड़े को तुम मुझे सौंपकर, अपनी राह चले जाना।।

कुंवर जी भी गुणी ठहरे, दो-दो हाथ खेल लिये,
और थोड़ी देर में ही, राजा के कपड़े जीत लिये।।

धोबी से बोले कुंवर जी, कपड़ों का हम क्या करेंगे,
घोड़े को पानी पिलाकर, हम यहां से चले जायेंगे।।

शाम को धोबी भी देखो, राजमहल में पहुंच गया,
राजकुंवर के हुनर की, तारीफ वो करने लगा।।

राजाजी से बोला धोबी, ऐसा यात्री नगर में आया,
आज तक मैंने न देखा, और कहीं न ऐसा पाया।।

जुए में तो कोई उससे, जीत सकता ही नही,
ऐसा सुनकर राजाजी ने, खेलने की इच्छा प्रकट की।।

दूसरे दिन कुंवर को धोबी, राजा के पास ले गया,
और फिर दोनों के बीच में, जुए का खेल शुरू हुआ।।

थोड़ी ही देर में कुंवर ने, राज-पाट सब जीत लिया,
और फिर राजाजी ने भी, अपनी हार को स्वीकार किया।।

मित्र, मंत्री, मुसाहब सबको, दरबार में बुला लिया,
राजा ने फिर पूछा सबसे, अब बताओ करूँ क्या।।

किसी ने सलाह दी, उसे तो मार दो,
और किसी ने सलाह दी, थोड़ा सा राज सौंप दो।।

राजा के पुराने मंत्री ने, जब यह समाचार पाया,
वह तुरंत राजा से मिलने, राजमहल में पहुंच गया।।

मंत्री बोला राजाजी से, मेरी बात मानिये,
उससे बेटी का ब्याह कराकर, लड़का उसे बना लीजे।।

इससे वह राज-पाट पर, अपना दावा भी न करेगा,
और यदि वह योग्य हुआ तो, आपका उत्तराधिकारी बनेगा।।

और यदि अयोग्य हुआ तो, यह तो समय बतायेगा,
जैसा होगा-वैसा व्यवहार, उसके साथ किया जायेगा।।

मंत्री की है बात मानकर, राजा ने बेटी ब्याह दी,
कुंवर जी भी राजकुमार थे, कोई साधारण मनुष्य नहीं।।

कुंवर जी के आचरण से, राजाजी बहुत खुश हुए,
और राजा ने फिर मंत्री को, खूब उपहार भेंट किये।।

विवाह के बाद कुँवर की, अलग व्यवस्था की गई,
राजा की बेटी भी फिर, पति के साथ रहने लगी।।

राजा की बेटी भी तो, खूब सदाचारिणी थी,
स्त्री-धर्म का पालन करके, हँसी-खुशी से रहती थी।।

उसके घर में भी तो देखो, सास-ननद कोई न थी,
जिनकी आज्ञा का पालन कर, आशीर्वाद वो लेती।।

कपड़े की गुड़ियाँ बनाकर, सास-ननद ही मान लिया,
अपना आँचल भी पसारकर, उनका आशीर्वाद लिया।।

राजा की बेटी ने ऐसा, रोज का नियम बना लिया,
और एक दिन ऐसा करते, राजकुमार ने देख लिया।।

राजकुमार ने उससे पूछा, तुम ऐसा क्यों करती हो,
बोली अपने स्त्री-धर्म का, पालन मैं तो करती हूं।।

यदि आपके घर होती, तो रोज ऐसा ही करती,
सास-ननद के पैर पड़कर, उनका आशीर्वाद लेती।।

सुनकर राजकुमार बोले, गुड़ियों के पांव क्यूँ पड़ो,
तुम्हारे घर भी सब कोई है, इच्छा हो तो अब चलो।।

राजकुमारी के हाँ करते ही, राजा ने सब प्रबंध किया,
खूब भेंट सामान देकर, बेटी को है विदा दिया।।

कुछ दिनों में राजकुमार, अपने देश पहूँच गये,
नई बहू को साथ लेकर, पिता के घर चल दिये।।

इधर कुँवर के जाने से, माता-पिता दुखी हो गये थे,
पुत्र बिछोह में रोते-रोते, दोनों अंधे हो गये थे।।

राजकुमार की सेना देखकर, लोग राजा के पास गये,
बोले कोई राजा आया, चढ़ाई करने के लिये।।

राजा गले में डाल अंगोछी, उससे मिलने तैयार हुए,
उसी समय राजकुमार भी, महल के द्वार पर आ गये।।

राजकुमार ने आने की, राजा को खबर भिजवा दिये,
ऐसा समाचार सुनकर, राजा-रानी खुशी से भर गये।।

पहले राजा-रानी को तो, बिल्कुल न विश्वास हुआ,
किन्तु फिर राजकुमार ने, अपने होने का सबूत दिया।।

बोली रानी यदि मेरे पुत्र हो, पैरों में माहुर छलक जाये,
और मेरे आँचल में भी, दूध भी तो आ जाये।।

देखो मैया की कृपा से, ऐसा ही होने लगा,
राजा-रानी ने कुँवर को, हृदय से लगा लिया।।

कुलाचार के अनुसार सबने, बहू का स्वागत किया,
बहू ने सास के पैर पड़कर, उनका आशीर्वाद लिया।।

कुछ दिनों के बाद बहू ने, सुंदर बालक को जन्म दिया,
और फिर तो महल में देखो, उत्सव खूब होने लगा।।

राजा-रानी के आंखों की, ज्योति भी वापिस आ गई,
परिवार में फिर से देखो, खुशहाली भी छा गई।

उस दिन से प्रत्येक घर में, आसमाई की पूजा होने लगी,
सबके घर में सुख-सौभाग्य की, वर्षा भी होने लगी।।

वट सावित्री व्रत

आओ सुनायें बात पुरानी, वट सावित्री व्रत की कहानी,
कहतीं थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

अश्वपति राजा एक ज्ञानी, मद्रदेश उनकी राजधानी,
यशवैभव और वंश कुलीन, किन्तु थे संतानहीन।।

यज्ञ-हवन था खूब है कीन्हा, सावित्री का जप है कीन्हा,
देवी सावित्री ने कृपा बरसाई, कन्या रूप में घर में आईं।।

नाम सावित्री उसको दीन्हा, लाड़-प्यार से बड़ा है कीन्हा,
कन्या बन गईं राजकुमारी, राजा बोले सुनो दुलारी।।

अपने योग्य वर तुम खोजो, सचिव को भी साथ में ले लो,
सावित्री फिर वर खोजने गईं, समय काल फिर वापिस आ गईं।।

एक समय नारद जी आये, उसी समय सावित्री आईं,
नारद जी को प्रणाम कीन्हा, मुनिवर ने आशीष दीन्हा।।

नारद बोले सुनो राजाजी, वर अभी ढूँढा या फिर नाहीं,
राजन बोले सुनो हे मुनिवर, सावित्री गईं थीं खोजने वर।।

वर पसंद करके वो आईं, नारद बोले कौन हैं भाई,
हाथ जोड़ सावित्री बोलीं, सुनिये मुनिवर विनती मोरी।।

ध्रुमत्सेन का राज्य विशाल, रुक्मी ने हरण कर लीन्हा,
राजा और रानी को उसने, वन-वन फिरने विवश है कीन्हा।।

उनके पुत्र हैं सत्यवान, बहुत हैं संस्कारवान,
वर रूप में उनको माना, आशीष दीजे कृपानिधाना।।

सत्यवान बहुत गुणवान, सत्य बोलना उनका काम,
रूप और गुणों से प्रोत, जैसे हो रत्नों का कोष।।

नारद बोले अश्वपति से, बात सुनो गंभीरता से,
एक दोष है उसके संग में, मृत्यु लिखी है एक वर्ष में।।

सत्यवान अल्पायु सुनकर, राजा हुए बहुत हताश,
बोले बेटी बात मान लो, करो अन्य वर की तलाश।।

सावित्री बोलीं अपने पिता से, ऐसा तो मैं सोच न पाऊँ,
अन्य वर की बात तो क्या है, इंद्र को भी वरण न पाऊँ।।

सावित्री के दृढ़ निश्चय से, नारद जी राजा से बोले,
मेरी अब एक बात मान लो, सत्यवान से ब्याह करा दो।।

शास्त्र विधि से ब्याह कराकर, राजा चले अपने देश,
सत्यवान-सावित्री का भी, घर में हुआ गृहप्रवेश।।

नारद जी की कही वो बातें, सावित्री हरदम याद है रखती,
एक-एक दिन गिनकर है काटती, ईश्वर को भी रोज भजती।।

मरणकाल जब आया पास, तीन दिन से किया उपवास,
सब देवों को उसने पूजा, तीजे दिन पितृ को पूजा।।

सत्यवान अपने नियम से, वन जाने तैयार हुए,
कुल्हाड़ी,टोकरी हाथ में लेकर, लकड़ी काटने जाने लगे।।

सास-ससुर की आज्ञा लेकर, सावित्री भी हुई तैयार,
सत्यवान के पीछे चल दीं, पति की रक्षा को इस बार।।

सत्यवान लकड़ी काटने, वृक्ष के ऊपर चढ़ गये,
हुई अचानक मस्तक पीड़ा, नीचे सावित्री की गोद में लेट गये।।

कुछ समय के बाद वहां पर, यमराज भी आ गये,
सावित्री को ईश्वरीय विधान के, नियम समझाने लगे।।

सत्यवान के जीव को, दक्षिण की ओर ले चले,
उनके पीछे-पीछे फिर, सावित्री के कदम चल पड़े।।

यमराज के पीछे सावित्री, बहुत दूर तक चली गईं,
यमराज फिर उनसे बोले, अब आगे तुम जा सकती नहीं।।

हे पति-परायण स्त्री, अब तक चली पति के संग,
किन्तु इसके आगे जाते, मनुष्य के अपने कर्म स्वयं।।

बात सुनकर बोली सावित्री, हे यमराज महाराज,
जहां मेरा पति जायेगा, मैं भी जाऊँगी उसके साथ।।

सनातन धर्म का पालन करके, पति के पीछे जाऊँगी,
पतिव्रत के प्रभाव के कारण, अब न पीछे हट सकूँगी।।

आपका कोई अनुग्रह, मेरी गति कम कर सकता नहीं,
और अब कोई भी मुझको, रोक सकता भी नहीं।।

धर्म और उपदेश सुनकर, यमराज बहुत प्रसन्न हुए,
और फिर सावित्री से, वर माँगने कहने लगे।।

यमराज की बातें सुनकर, सावित्री बोलीं हे प्रभु नाथ,
मेरे ससुर जी अंधे हैं, उनको ज्योति दे दो आप।।

यमराज ने तथास्तु कहकर, लौट जाने की सलाह दी,
यमराज की कृपा समझकर, सावित्री फिर कहने लगीं।।

हे भगवान इतनी विनती, जहां मेरे पति जा रहे हैं,
उनके पीछे चलने में, मुझे कष्ट नहीं हो रहे हैं।।

पति-परायण होना तो, मेरा तो कर्तव्य है,
दूसरे आप धर्मराज, और परम सज्जन ही हैं।।

सत्पुरुषों का समागम भी, सरलता से नहीं मिलता है,
उनके नीति वचन सुनकर, बड़ा पुण्य ही मिलता है।।

ऐसे श्रद्धा युक्त वचन से, यमराज पुनः खुश हो गये,
और सावित्री से दूजा वचन, मांगने को कहने लगे।।

यह सुनकर सावित्री बोलीं, मेरी विनती सुन लीजिये,
धुमत्सेन का राज्य चला गया, वह वापिस दिलवा दीजिये।।

धर्म-कर्म में प्रीति उनकी, सदैव ही बनी रहे,
ईश्वर की कृपा सदैव, उन पर भी बरसती रहे।।

यमराज ने तथास्तु कहकर, लौट जाने की प्रार्थना की,
किन्तु सावित्री नही मानीं, उनके पीछे चलतीं रहीं।।

अंत में फिर यमराज ने, तीसरा वर मांगने को कहा,
पितृ कुल की सोच सावित्री ने, सौ भाई देने को कहा।।

यमराज के पीछे फिर से, सावित्री चलने लगीं,
उनके समझाने पर भी वे, अपनी बात पर अडिग रहीं।।

उसकी पतिभक्ति, निष्ठा से, यमराज द्रवीभूत हो गये,
कहने लगे तुम्हारे नीतिवचन, मुझको प्रसन्न कर गये।

मेरा हृदय प्रसन्न हूआ, अब तुम एक काम करो,
सत्यवान के जीवन के अलावा, एक वर तुम मांग लो।।

एक पति-परायण स्त्री को, पति की आयु के सिवा,
क्या मांगने की इच्छा होती, इस वर के अलावा।।

यह सोचकर सावित्री ने, देखो यह वरदान मांगा,
पति की आयु के लिये, सौ पुत्रों का वर है मांगा।।

सावित्री से प्रसन्न होकर, यमराज ने वर दे दिया,
सत्यवान को अपने पाश से, मुक्त भी है कर दिया।।

वरदान देकर फिर यमराज, अपने लोक को चले गये,
सत्यवान के मृत शरीर में, प्राण संचरित होने लगे।।

जीव संचार होने से, सत्यवान जीवित हूए,
और फिर वे देखो तो, उठकर ही बैठ गये।।

वटवृक्ष के पास फिर, सावित्री भी आ गईं,
और फिर सत्यवान को, सम्पूर्ण वृतांत सुनाने लगीं।।

सत्यवान और सावित्री, खूब प्रसन्न हो गये,
माता-पिता से मिलने को, आतुर वे होने लगे।।

माता-पिता से मिलने को, आश्रम की ओर चले गये,
वहां सत्यवान के माता-पिता, पुत्र वियोग में दुखी हूए।।

सत्यवान के पहूंचने से, माता-पिता खुश हो गये,
सत्यवान फिर सारा वृतांत, उनको भी सुनाने लगे।।

सावित्री के व्रत की बात, पूरे देश में फैल गई,
हर जगह सावित्री की, जय-जयकार होने लगी।।

राज्य के लोग भी, ध्रुमत्सेन को ले गये,
राज सिंहासन पर बैठाकर, जय-जयकार करने लगे।।

सावित्री के पितृ कुल में, मंगल-उत्सव होने लगे,
यमराज के वर से ही, अश्वपति के सौ पुत्र हूए।।

यमराज के अंतिम वर से, सावित्री के सौ पुत्र हूए,
सत्यवान-सावित्री भी, शतपुत्र युक्त हूए।।

सत्यवान ने भी फिर देखो, वर्षों तक है राज किया,
और फिर अंत समय में, वैकुंठवास को प्राप्त किया।।

इस व्रत की इतनी महत्ता, हर सुहागन रखती है,
मनोकामना पूर्ण होती, सुख-सौभाग्य पाती है।।

गंगा-दशहरा

"आओ-आओ एक बात बतायें, गंगा माँ की कथा सुनायें,
कहतीं थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

एक था पावन अयोध्या राज्य, जहाँ के राजा सगर महाराज,
उनकी थीं देखो दो रानी, एक सुमति एक केशिनी रानी।।

केशिनी के असमंजस पुत्र, अंशुमान नामक एक पौत्र,
सुमति रानी के तो देखो, पूरे साठ हजार थे पुत्र।।

महाराज सगर प्रतापी, अश्वमेघ यज्ञ है कीन्हा,
यज्ञ पूरा कराने हेतु, घोड़े को है छोड़ दीन्हा।।

साठ हजार भाई सब मिलकर, घोड़े को तो ढूंढने गये,
ऋषि कपिल के श्राप से, पूरे ही भस्म हो गये।।

अंशुमान पहूँचे कपिलाश्रम, वहाँ गरुण भगवान मिल गये,
बोले तुम्हारे सभी चचा तो, श्राप से हैं भस्म हो गये।।

जो तुम उनकी मुक्ति चाहो, गंगा को धरती पर लाओ,
लौकिक जल से नहीं तरेंगे, गंगा का ही जल तुम लाओ।।

अभी घोड़े को ले जाकर, पितामह का यज्ञ पूर्ण करो,
फिर गंगा को धरती पर, लाने का प्रयत्न करो।।

अंशुमान ने राज्य में जाकर, राजा सगर को बात बताई,
फिर उनकी मृत्यु होने पर, अयोध्या की गद्दी पाई।।

ईश्वर की कृपा बरसी, दिलीप नामक पुत्र हुए,
थे वे वीर और प्रतापी, यश-वैभव को प्राप्त किये।।

फिर दिलीप को राज्य सौंपकर, अंशुमान चले गये,
गंगा को धरती पर लाने, पर्वत पर तप करने लगे।।

अंशुमान ने पाई मृत्यु, पर गंगा जी को ला न सके,
बाद में फिर दिलीप भी, पहाड़ पर तप करने लगे।।

उनके पुत्र भगीरथी, थे निःसंतान धर्मात्मा,
सोचते थे संतान पाऊँ, फिर मैं भी करूँ प्रार्थना।।

आई देखो प्रौढ़ावस्था, संतान वो न पा सके,
फिर मंत्री को है राज सौंपा, और तप करने लगे।

इन्द्रियों को जीतकर, घोर तप करने लगे,
बहुत वर्ष बीत गये, तब भगवान ब्रम्हा खुश हुये।।

बोले भगीरथी तुमने तो, अभूतपूर्व तप किया,
जो चाहो माँगो तुम, वरदान तुमको है दिया।।

बोले भगीरथ हाथ जोड़, प्रभु इतना कीजिये,
हिमवान पुत्री गंगा को, धरती पर अवतीर्ण कीजिये।।

महाराज सगर के पुत्रों का, उद्धार उनसे कीजिये,
और मुझको संतान का, वरदान भी दे दीजिये।।

बोले ब्रम्हा,सुनो भगीरथ, गंगा इतनी वेगवती,
शिवजी के अतिरिक्त कोई भी, धारण करने योग्य नहीं।।

कुल का गौरव बढ़ाने वाला, पुत्र भी तुम पाओगे,
शिवजी को प्रसन्न करो, तो गंगा को ला पाओगे।।

ब्रम्हा जी की बात सुन, भगीरथ बहुत प्रसन्न हुये,
पैर के अंगूठे पर खड़े हो, शिव की अराधना करने लगे।।

ज्यों ही एक वर्ष बीता, महादेव जी प्रसन्न हुये,
गंगा को शीश पर, धारण करने राजी हुये।।

ब्रम्हलोक से निकलते ही, गंगा अभिमान में भर गईं,
शिव की जटा को भेदकर, पाताल में चली जाऊँगी।।

जटाजूट फैलाया शिव ने, गंगा को समाहित कर लिया,
सालों-साल बीत गये देखो, निकलने का मार्ग भी न मिला।।

शिव की आराधना करें भगीरथ, नाथ प्रसन्न हो गये,
ब्रम्हा के निर्मित तालाब में, गंगा जी को छोड़ दिये।।

सात धाराओं में बँटी हैं गंगा, देखो वो बहने लगीं,
हादिनी,पावनी,नलिनी तो, पूर्व दिशा की ओर चलीं।।

सुचक्षु, सीता और सिंधु, पश्चिम की तो ओर चलीं,
सातवीं के रूप में गंगा, भगीरथ के पीछे चलीं।।

पृथ्वी तल पर आईं गंगा, कोलाहल करने लगीं,
जहाँ -जहाँ से निकलीं गंगा, भूमि शोभायमान होने लगी।।

गंगा जी के मार्ग में, महात्मा जह्नु करें तपस्या,
उनके पास से निकलीं गंगा, जह्नू ने पान कर लिया।।

देवताओं ने दृश्य देखा, प्रार्थना करने लगे,
लोक-कल्याण की खातिर, गंगा को छोड़ दीजिये।।

जह्नु ने अपने कान से, फिर गंगा को निकाल दिया,
तभी से गंगा का नाम, जान्हवी भी पड़ गया।।

कल-कल करतीं आईं गंगा, फिर उस स्थान पर,
साठ-हजार पुत्रों की भस्मी, रखी थी जिस स्थान पर।।

गंगा-जल का स्पर्श पाकर, मुक्ति को प्राप्त हो गये,
उसी समय वहाँ पर, ब्रम्हा जी प्रकट हुए।।

बोले भगीरथ तुमने तो, इतना अपूर्व तप किया,
और अपना नाम भी, जग में अमर कर लिया।।

आज से "भागीरथी", गंगा का भी एक नाम होगा,
जो सदैव तुम्हारा भी, स्मरण करवायेगा।।

और फिर तो गंगा जी, कल-कल करने लगीं,
लोक-कल्याण की खातिर, भूतल पर बहने लगीं।।

रक्षाबंधन की कथा

आओ-आओ एक बात सुनायें, रक्षाबंधन की कथा सुनायें,
कहतीं थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

एक बार देवता-दैत्य में, घमासान युद्ध हुआ,
जो लगातार तो देखो, बारह-वर्ष चलता रहा।।

इस युद्ध में सभी देवता, दैत्यों से पराजित हो गये,
प्राण बचाने की खातिर तो, इंद्र, बृहस्पतिदेव से कहने लगे।।

हे स्वामी!इस समय यहां पर, न तो मैं ठहर सकता हूँ,
और ऐसी स्थिति में, न तो मैं भाग सकता हूँ।।

अब तो मुझे लड़कर ही, प्राण अपने गँवाना होगा,
या फिर स्वामी आपको ही, कोई उपाय बताना होगा।।

ऐसे वचन सुन इंद्राणी, बीच में ही बोल उठीं,
नाथ आप निर्भय रहें, मैं भी कुछ अवश्य करूँगी।।

मैं ऐसा उपाय करती हूं, विजय आपको ही मिलेगी,
निराशा अब दूर रखिये, सफलता आपको ही मिलेगी।।

प्रातः श्रावणी पूर्णिमा थी, शुभ अवसर की बेला थी,
इंद्राणी ने उपाय किया, ब्राम्हणों को बुलवा लिया।।

स्वस्ति वाचन उनसे कराकर, रक्षा-पोटली तैयार की,
इंद्र की दाहिनी भुजा में, इंद्राणी ने बाँध दी।।

रक्षाबंधन से सुरक्षित, इंद्र जब रण में खड़े,
दैत्यों को उस समय वे, काल के समान दिख पड़े।।

उस समय ही दैत्य वो सारे, डरकर ही भाग गये,
और समस्त देवता फिर, भय से मुक्त हो गये।।

इस त्योहार की इतनी महत्ता, दुश्मन से मुक्ति मिले,
ईश्वर की कृपा से तो, धन-धान्य भी खूब मिले।।

इस दिन मनुष्य सुबह से उठकर, प्रथम तो स्नान करे,
फिर पितर, देवता और, सप्तऋषियों का तर्पण करे।।

दोपहर के बाद में, ऊनी, सूती वस्त्र ले,
उसमें चाँवल को रखकर, गाँठ फिर बाँध दे।।

हल्दी, केशर से रंग कर, एक पात्र में रख दीजिये,
घर को गोबर से लीपकर, चाँवल का चौक पूरिये।।

अन्न से भरकर एक घट, चौक पर रख दीजिये,
चाँवल की गांठों को फिर, पीले कपड़े में लपेटिये।।

ऐसे ही चाँवल की फिर, कई पोटलियाँ बनाइये,
इन सबको चौक पर, स्थापित कर दीजिये।।

ब्राम्हण से पूजन करवाकर, यज्ञोपवीत पहनिये,
सब सदस्यों के हाथ में, गांठो को फिर बांधिये।।

इस पावन रक्षासूत्र से, सब की रक्षा होती है,
प्रभु की है कृपा बरसती, धन-धान्य की वर्षा होती है।।

भाई के हाथों में राखी, बहन भी है बाँधती,
यह प्रथा तो आज भी, इस तिथि पर है प्रचलित।।

प्राचीन ग्रंथों में लिखी, श्रावणी की इतनी महत्ता भी,
प्राचीन समय में ऋषि-महर्षि, शुरुआत कराते विद्या की।।

कजरी की नवमी

"आओ-आओ एक बात सुनायें, कजरी की ही कथा सुनायें,
कहतीं थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

एक गाँव में बारीबहू, नाम की थी नारि,
अपने पति के प्रति, करती अजीब व्यवहार।।

कजरी की नवमी तिथि थी, गांव में तो धूम मची थी,
पड़ोसिनों से उसने पूछा, मैं क्या करूँ आज सखी री।।

उन्होंने कहा आज दिन भर, व्रत रखना चाहिये,
फिर नवमी की पूजा कर, दान-पुण्य करना चाहिये।।

यह सुनकर घर आई, चादर ओढ़ पड़ रही,
बाद में पति ने पूछा, रसोई आज क्यों नहीं बनी।।

बोली आज मेरा व्रत है, इसीलिये तो नहीं बनी,
पति के आग्रह पर भी, देखो तो वो न उठी।।

फिर तो पतिदेव समझ गये, जरूर कोई बात है,
कोठली में छुप गये, देखूं क्या राज है।।

पति को गया जानकर, फिर वो बाजार गई,
वहाँ से दो गन्ने लाकर, उनको ही चूस गई।।

फिर उसने रोटी बनाई, घी लगाकर उनको खाई,
उसके बाद फिर सिवई बनाकर, घी और शक्कर के संग खाई।।

इतने पर संतोष न हुआ, फिर उसने खिचड़ी बनाई,
उसमें भी घी डालकर, खूब मजे से वो भी खाई।।

पेट-पूजा से निवृत हो, पूजा की तैयारी की,
फूहड़ थी इस कारण से, नवमी लिखना जानती नही।।

बारीबहू ने देखो तो फिर, ऐसा अजीब काम किया,
गोबर को पानी में घोलकर, दीवार पर पोत दिया।।

उसके बाद स्नान करके, नवमी की बिढ़ई बनाई,
फिर उसके बाद तो, पूजन करने को वो आई।।

मनमानी पूजा करके फिर, बोली"नवमी माई, बिढ़ई खायेगी",
पति ने नवमी माई बनकर, कोठे से (हूँ) आवाज लगाई।।

बारीबहू फिर से बोली, "नौ बासी नौ ताती, नौ के चूरे खायेगी",
पति ने नवमी माई बनकर, फिर से(हूँ) आवाज लगाई।।

दौड़ी गई गाँव में फिर तो, स्त्रियों से बोलने लगी,
मेरी पूजा से खुश होकर, नवमी माई बोलने लगी।।

स्त्रियों ने आश्चर्य में भरकर, पूछा कैसी नवमी लिखी,
जो देखो तुझसे खुश होकर, वो बोलने भी लगीं।।

बारीबहू फिर से बोली, मुझे बनाना आता नहीं था,
पानी में गोबर घोलकर, वही दीवार पर पोत दिया था।।

उस फूहड़ के कहने पर ही, स्त्रियों ने आकर प्रश्न किया,
"नवमी माई बिढ़ई खायेगी", पति ने फिर से "हूँ" की आवाज लगाई।।

आश्चर्य में भरकर वे स्त्रियां, ईर्ष्यावश सोचने लगीं,
हम सब करतीं इतनी पूजा, फूहड़ की नवमी बोल रहीं।।

स्त्रियों के चले जाने पर, उसने बिढ़ई भी खूब खाई,
और फिर चारपाई पर, बिछौना डालकर सो गई।।

कोठे से निकलकर पति, बाहर से फिर वो आया,
स्त्री को आवाज लगाकर, दरवाजा भी खटखटाया।।

करवट बदलकर सोचती है, मेरा तो जी अच्छा नही,
उठे तो अब कौन उठे, में दरवाजा खोलती नही।।

उसके करवट बदलने से, चारपाई चरचरा गई,
बहाना बनाकर वो बोली, मेरी पसलियां चरचरा रहीं।।

पति भी फिर कोशिश कर के, किसी तरह अंदर आ गया,
उसको देखते ही फिर, स्त्री ने तुरंत प्रश्न किया।।

पति से बोली रूखे स्वर में, जहाँ जाना था तू नहीं गया,
पति बोला रास्ते में, एक बड़ा सर्प मिल गया।।

फिर प्रश्न कर वो बोली, सर्प कितना बड़ा था,
पति ने गुस्से से कहा, गन्ने के जितना बड़ा था।।

बारीबहू फिर से बोली, कैसे वो सरकता था,
पति बोले अनमने से, जैसे खिचड़ी में घी सरकता था।।

पति ने उसके बाद देखो, खूब डाँट-फटकार लगाई,
उसकी पूरी करनी बताकर, खरी-खोटी खूब सुनाई।।

तेज सी आवाज सुनकर, स्त्रियाँ सब दौड़ीं आईं,
पूछतीं बारीबहू से, क्या हुआ क्यों आवाज आई।।

बारीबहू तुनककर आई, यहां पर सब तुम क्यों होआईं,
नवमी की पूजा हुई, और क्या आवाज आई"।।

उस दिन से बारीबहू फिर, अच्छे से रहने लगी,
नवमी माई की कृपा बरसी, सब काम वो करने लगी।।

नवमी माई कृपा बरसाना, हम सबकी तो लाज राखना,
धन-धान्य की वर्षा करना, बच्चों की है रक्षा करना।।

हलषष्ठी की कथा

आओ-आओ एक बात सुनायें, हलषष्ठी की कथा सुनायें,
कहतीं थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

एक गाँव में थी एक ग्वालिन, खूब काम वो करती थी,
दूध-दही बेचने को वो, गांव-गांव में जाती थी।।

एक बार वो गर्भवती थी, बच्चा होने वाला था,
किन्तु उसका दूध-दही भी, बेचने को रखा था।।

दूध-दही की मटकी अपने, सिर पर रख के निकल गई,
किन्तु बीच रास्ते में ही, प्रसव-पीड़ा होने लगी।।

एक खेत में जाकर उसने, झरबेरी को आड़ किया,
और उसने वहीं पर फिर, एक बच्चे को जन्म दिया।।

लड़के को कपड़े में लपेटकर, वहीं छिपाकर चली गई,
दूध-दही की मटकी लेकर, गाँव में बेचने पहुँच गई।।

उस दिन गाँव में सब स्त्रियों का, हरछठ का उपवास था,
हो रही पूजा की तैयारी, सबमें खूब उत्साह था।।

उसका दूध-दही भी देखो, गाय-भैंस का मिला हुआ,
लेकिन उसने भैंस का कहकर, देखो सबको बेच दिया।।

इधर खेत की जिस झाड़ी में, बच्चा उसने छिपाया था,
वहीं पर ही एक किसान, देखो हल जोत रहा था।।

सहसा उसके बैल बिदके, हल की नोक खिसक गई,
और वह नोक जाकर के, बच्चे के पेट में लग गई।।

हल की नोक लगने से, बच्चे का पेट फट गया,
और कितना दुःखद हुआ, बच्चा तुरंत मर गया।।

यह देखकर किसान को, बहुत भारी दुख हुआ,
झरबेरी के काँटों से ही, बच्चे का पेट सिल दिया।।

इतने में ग्वालिन भी देखो, दूध बेचकर आ गई,
बच्चे की यह दशा देखकर, दहाड़ मार रोने लगी।।

समझ गई फिर ग्वालिन देखो, मुझे प्रभु ने दंड दिया,
सब स्त्रियों के व्रत को मैंने, झूठ बोल खंडित किया।।

मुझको गाँव में जाकर अपना, पाप प्रकट करना होगा,
आगे प्रभु की जो हो मर्जी, अब तो वैसा ही होगा।।

ऐसा निश्चय करके ग्वालिन, गाँव में वापिस चली गई,
मेरा दूध-दही था मिलौनी, सबसे वो कहने लगी।।

उसके मुंह से बात सुनकर, सबने उसे आशीष दिया,
ग्वालिन ने है सच बोलकर, व्रत खंडित होने से बचा लिया।।

स्त्रियों से आशीष लेकर, फिर से उस खेत पर गई,
बच्चे को जीवित देखकर, अचरज से वो भर गई।।

देखा पलाश की छाँव में, बच्चा उसका खेल रहा,
मेरे पाप के प्रायश्चित से, बच्चा जीवित हो गया।।

ग्वालिन ने उसी समय फिर, देखो ये प्रण किया,
अब कभी भी जीवन में, झूठ न बोलने का वचन दिया।।

हे हरछठ महारानी मेरी, हम पर सदा दया करना,
अपनी कृपा बरसाकर मैया, संतान की रक्षा तुम करना।।

हलषष्ठी की कथा

(हरछठ) 2

आओ सुनायें बात पुरानी, हलषष्ठी की है ये कहानी,
कहती थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

एक गाँव में दो औरतें, देवरानी-जेठानी थी,
जेठानी का नाम था तारा, देवरानी सलोनी थी।।

सलोनी थी बहुत ही सुंदर, दयावान,सुशीला भी,
सदाचारिणी बहुत थी वो, नाम के अनुरूप ही।।

तारा उसकी बिल्कुल उल्टी, दयाहीन और दुष्टा थी,
हर प्राणी के प्रति भी, बिल्कुल वो निर्मोही थी।।

हरछठ का पावन दिन था, दोनों ने उपवास किया,
सांयकाल भोजन बनाकर, ठंडा होने को रख दिया।।

दोनों अपनी थाली परोसकर, आँगन में रखकर आ गईं,
और फिर एक दूसरे के, सिर की जूं देखने लगीं।।

देवरानी ने खीर बनाई, जो थी अच्छी मीठी-मीठी,
जेठानी ने महेरी बनाई, जो थी बहुत खट्टी भी।।

अचानक दोनों के घर में, कुत्ते थे घुस गये,
और चप-चप करते-करते, थालियाँ खाने लगे।।

सलोनी ने देखा फिर, कुत्ता खीर खा रहा,
बरतन में जो भी बची थी, उसको भी परोस दिया।।

बोली तेरे हिस्से का भोजन, तेरे पास ही जायेगा,
मुझको जो ईश्वर देगा, वह फिर देखा जायेगा।।

कुत्ते को देखकर तारा, मूसल हाथ में उठा लाई,
घर में छेंककर इतना मारा, कुत्ते की कमर टूट गई।।

अधमरा होकर के कुत्ता, जान बचाकर भाग गया,
थोड़ी देर में पहला कुत्ता, उसको राह में मिल गया।।

पहले ने दूजे से पूछा, कहो क्या हाल है,
दूजा बोला तुम्ही कहो, मेरा तो बुरा हाल है।।

पहला बोला क्या कहूँ मैं, बड़ी नेक स्त्री थी,
खीर खाते देखकर, बिल्कुल न चिल्लाई थी।।

मैंने उसके घर में तो, पेट भर भोजन किया,
मेरी आत्मा ने उसे, खूब आशीर्वाद दिया।।

ईश्वर से है यही मनाऊं, अब तो जो मैं मरूँ,
अगले जनम में उसी का ही, पुत्र बन सेवा करूँ।।

दूजा बोला मेरी तो, बहुत बुरी दशा हुई,
दो-चार निवाले खाये थे, कि वो दुष्ट स्त्री आ गई।।

थाली में मुँह डालते ही, दाँत खट्टे हो गये,
और उसकी मार से फिर, अधमरे से हो गये।।

अब तो ईश्वर से मनाऊं, अब की बार जो मैं मरूँ,
अगले जन्म में उसी का, पुत्र बन बदला मैं लूँ।।

और फिर वह कुत्ता देखो, उसी दुख में मर गया,
और फिर उसी स्त्री का, पुत्र बन पैदा हुआ।।

अगली हरछठ में जब देखो, घर-घर पूजन हो रहा,
तारा का वह लड़का देखो, उसी दिन ही मर गया।।

इससे तारा को है देखो, बहुत ही दुख हुआ,
किन्तु जीवन-मरण समझकर, उसने संतोष कर लिया।।

किन्तु आगे से फिर तो, नियम ही ये बन गया,
हर साल उसके लड़का होता, और हरछठ को ही मर जाता।।

ऐसी दशा में लगी सोचने, कोई तो कारण होगा,
यही विचार करके सोई, रात स्वप्न में ये देखा।।

उसी कुत्ते ने सामने आकर, बोला मैं एक बात कहूँ,
मैं ही तेरा पुत्र होकर, बार-बार मर जाता हूँ।।

मेरे प्रति की थी दुष्टता, कमर मेरी तोड़ी थी,
उसी का बदला लेने की, कसम मैंने खाई थी।।

स्त्री ने फिर माफी माँगी, कुत्ते से कहने लगी,
जिससे तू राजी हो जाये, वैसा ही अब मैं करूँगी।।

कुत्ते ने उत्तर दिया फिर, हरछठ का व्रत तुम करना,
हल का जोता-बोया कोई भी, अन्न और फल तुम न खाना।।

विधि-विधान से व्रत को करना, गाय का दूध-दही न खाना,
होली की भुनी बाल और धूलि, हरछठ की पूजा में चढ़ाना।।

तेरी पूजा के समय में, आकाश में तारा गण छिटकें,
उसी बात से तुम समझना, मैं रहूँगा अब घर में।।

कुत्ते की बात मानकर, तारा ने ऐसा ही किया,
लड़के उसके जीने लगे अब, व्रत को नियम से है किया।।

हरछठ मैया की कृपा, इतनी अपरम्पार,
बच्चों की है रक्षा करती, देतीं खुशियां अपार।।

हरितालिका तीज

आओ-आओ एक बात बतायें, हरितालिका-तीज की कथा सुनायें,
कहतीं थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

एक बार शिवशंकर जी ने, गौरा जी को कथा सुनाई,
इस व्रत का महत्व बताकर, उनके पूर्व-जन्म की याद दिलाई।।

गौरा जी से शिव जी बोले, उत्तर दिशा में हिमालय चोटी,
वहीं बालापन में गंगा किनारे, कठिन तपस्या तुमने की थी।।

बारह-वर्ष अधोमुखी टंगकर, धूम्रपान पर जीवित रहीं,
फिर चौबीस वर्ष तक देखो, सूखे पत्ते खाकर जीवित रही।।

माघ के महीने में तुमने, जल में देखो वास किया,
बैशाख की कड़ी धूप में, पंचधूनी को तपा।।

श्रावण के महिने में देखो, इतना कठिन तप किया,
निराहार रहकर के तुमने, घर के बाहर वास किया।।

एक दिन नारद मुनि, तुम्हारे दर्शन को आ गये,
और फिर पिता हिमालय, उनका पूजन करने लगे।।

हाथ जोड़कर फिर हिमालय, नारद जी से कहने लगे,
किस प्रयोजन से आप आये, विस्तार से बतलाइये।।

नारद जी हिमवान से बोले, मुझे विष्णु जी ने भेजा है,
आपकी कन्या के साथ, उनकी विवाह करने की इच्छा है।।

हिमवान ने हाथ जोड़कर, देखो ये उत्तर दिया,
यदि विष्णु जी की इच्छा है, तो इसमें मुझे आपत्ति क्या।।

नारद जी फिर तो देखो, विष्णु लोक पहुंच गये,
और फिर विष्णु जी से, अपनी बात कहने लगे।।

हिमालय की पुत्री है वो, देखो पार्वती गुणवान,
मैंने ब्याह तय कर दिया, आप के साथ श्री भगवान।।

इधर नारद जी के जाने पर, हिमालय ने पार्वती से कहा,
मैंने तुम्हारा ब्याह देखो, विष्णु जी संग तय किया।।

तुमको पिता का यह वचन, बाण के समान है लगा,
और तुम्हारे मन को भी, भारी आघात है पहुंचा।।

पिता के वहाँ से जाते ही, तुम विलाप करने लगी,
फिर तुम्हारी प्रिय सखी, तुमसे कारण पूछने लगी।।

तुम बोलीं ब्याह पिता ने, विष्णु जी संग तय किया,
किन्तु मैंने महादेव से, करने का प्रण है लिया।।

इसीलिये अब हे सखी, लगता है प्राण त्याग दें,
या फिर तू ही कोई उपाय, या फिर कोई सलाह दे।।

सखी बोली पार्वती, प्राण देने की जरूरत नहीं,
गहन वन में ले चलूंगी, पिता भी ढूंढ सकते नहीं।।

ऐसी सलाह करके सखी, गहन वन में ले गई,
इधर हिमालय को घर पर, तुम देखो तो न मिलीं।।

घर पर तुमको न पाकर, हिमालय फिर खोजने लगे,
और फिर बाद में, गहन चिंता करने लगे।।

विष्णु जी से ब्याह का, नारद जी को वचन दिया,
यदि विष्णु जी ब्याहने आ गये, तो क्या मैं जवाब दूंगा।।

चिंता,दुख से व्याकुल होकर, मूर्छित होकर गिर पड़े,
राजा की यह दशा देखकर, सारे पर्वत कारण पूछने लगे।।

राजा बोले मेरी कन्या को, न जाने कौन चुरा ले गया,
और फिर सारा पर्वत गण, तुम्हारी खोज में लग गया।।

यहां सखी समेत नदी किनारे, तुम गुफा में प्रवेश कर गईं,
और फिर बड़े प्रेम से, भजन-पूजन करने लगीं।।

हस्त नक्षत्र में भादों तीज को, बालू का शिवलिंग बना लिया,
निराहार व्रत करते हुए, गीत-वाद्य संग जागरण किया।।
हे प्रिय,तुम्हारे व्रत से, मेरा आसन डिग उठा,
फिर जहाँ पूजन कर रहीं थीं, मैं वहाँ पहुँच गया।।

तुमसे प्रसन्न होकर मैंने, वरदान मांगने को कहा,
और फिर तुमने तो देखो, मुझसे ही ये कहा।

अपनी अर्धांगिनी बनाने का, वर मुझसे मांग लिया,
मैं भी तुमको वर देकर के, कैलाश पर फिर चला गया।।

सुबह पूजा की सामग्री को, नदी में विसर्जित कर दिया,
और फिर स्नान करके, सखी समेत पारण किया।।

तुम्हें खोजते हुए हिमालय, उस जगह पर आ गये,
और फिर रुदन करते हुए, तुमसे ये पूछने लगे।

बेटी इस घोरवन में, कैसे तुम पहुंच गईं,
और फिर अपने पिता से, ऐसे वचन कहने लगीं।।

विष्णु जी के साथ आपने, ब्याहने की बात कही,
इसी कारण घर से मैं, भागकर यहां आ गई।।

शिवजी के साथ ब्याह का, यदि आप वचन दे देंगे,
तो ही हम आपके साथ, अभी घर को चलेंगे।।

सब प्रकार से संतुष्ट कराकर, हिमालय तुम्हें घर ले गये,
और कालांतर में फिर, विवाह की तैयारी करने लगे।।

बाद में फिर विधिपूर्वक, मेरे साथ ब्याह किया,
इस व्रत की इतनी महिमा, जो तुमको ये सौभाग्य मिला।।

सखी तुम्हारा हरण करके, वन में तुमको ले गई,
इसी कारण यह तीज, हरितालिका तीज कहलाने लगी।।

सौभाग्य चाहने वाली स्त्रियां, इस व्रत को करने लगीं,
और मेरी कृपा से, सुख-सौभाग्य पाने लगीं।।

जो स्त्री विधिपूर्वक, इस व्रत को करती है,
वह तुम्हारे समान ही, अचल सौभाग्य पाती है।।

सम्पूर्ण सुखों को प्राप्त कर, मोक्ष प्राप्त करती है,
हे पार्वती इस व्रत की, देखो इतनी महिमा होती है।।

व्रत भी यदि न कर सके तो, कथा अकेली सुन लेता,
वो जीव अश्वमेघ यज्ञ का, देखो फल ही पा लेता।।

ऋषि-पंचमी 1

आओ-आओ एक बात सुनायें, ऋषि-पंचमी की कथा सुनायें,
कहतीं थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

दूर विदर्भ देश में एक, सुमित्र नामक ब्राम्हण था,
सुमति नाम का उसका पुत्र, वेद-वेदांग का ज्ञाता था।

सुमित्र भी महाज्ञानी, संग खेती भी वो करता था,
उसकी पत्नि बहुत मेहनती, नाम उसका जयश्री था।।

एक बार रजोवती होकर भी, गृहकार्य करती रही,
कार्य करते-करते वो, ब्राम्हण का स्पर्श करती रही।।

देवयोग से समय पाकर, देखो फिर ऐसा हुआ,
उन दोनों का प्राणान्त भी, एक साथ ही हुआ।।

दूसरे जन्म में स्त्री ने तो, कुत्ती की योनि पाई,
और उस ब्राम्हण देवता ने, बैल की योनि पाई।।

कुत्ती और बैल के रूप में, संग-संग वो रहते थे,
इस जन्म में भी दोनों, पुत्र के घर में रहते थे।।

एक समय सुमति ने देखो, माता-पिता का श्राद्ध किया,
उसी समय वहां पर देखो, ऐसा अचानक ही हुआ।।

ब्राम्हणों के लिये बनी खीर में, एक सर्प विष उगल गया,
इस घटना को अपनी आंखों से, कुत्ती ने है देख लिया।।

सोचा खाकर ब्राम्हण मरेंगे, सो उसने एक उपाय किया,
भोजन के लिये बनी खीर को, कुत्ती ने जाकर छू लिया।।

यह देख सुमति की स्त्री, क्रोध में है भर गई,
जलती हुई लकड़ी से देखो, कुत्ती को मारने लगी।।

इस कारण उस दिन कुत्ती को, कुछ भी भोजन न मिला,
बैल को सुमति ने हल में जोता, तो उसका मुंह भी बंधा रहा।।

बैल भी देखो तो उस दिन, तृण भी नहीं चर सका,
इन दोनों के भूखे रहने से, श्राद्ध करना व्यर्थ गया।।

सुमति देखो इतना ज्ञाता, पशुओं की भाषा समझता था,
माता-पिता की इस स्थिति का, कारण जानना चाहता था।।

उत्तर पाने के लिये, ऋषियों के पास पहुंच गया,
माता-पिता के पशु योनि में, जन्म का कारण पूछने लगा।।

ऋषियों ने उन दोनों के, पूर्व जन्म का हाल सुनाया,
और साथ में सुमति को फिर, इसका एक उपाय बताया।।

तुम दोनों पति-पत्नि, ऋषि-पंचमी का व्रत करना,
और उस दिन बैल की, कमाई की वस्तु न खाना।।

माता-पिता की मुक्ति हेतु, दोनों इस व्रत को करने लगे,
और व्रत के प्रभाव से, माता-पिता मोक्ष को प्राप्त हो गये।।

इस व्रत में तो पूजा होती, अत्रि,भारद्वाज की,
कश्यप, विश्वामित्र, जमदग्नि, गौतम, सपत्नीक वशिष्ठ की।।

सप्तऋषियों की पूजा करने से, सारे दोष मिट जाते,
सुख-सौभाग्य है मिलता, धन-धान्य के भंडार भर जाते।।

ऋषि-पंचमी की कथा 2

आओ-आओ एक बात बतायें, ऋषि-पंचमी की कथा सुनायें,
कहतीं थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

विदर्भ देश में उत्तंक नामक, एक ब्राम्हण रहता था,
उसकी दो संताने देखो, एक पुत्री,एक पुत्र था।।

अच्छे संस्कारों से, पुत्र संस्कारी हो गया,
और थोड़ी ही उम्र में, वेदों का ज्ञाता हो गया।।

उसकी कन्या भी बड़ी सुशीला, अच्छे घर में ब्याह गई,
किन्तु पूर्व जन्म के पा, प से, जल्दी ही विधवा हो गई।।

इस दुःख से संतप्त होकर, ब्राम्हण ने फिर ये किया,
अपनी स्त्री और कन्या संग, गंगा किनारे रहने लगा।।

धर्म चर्चा करके ब्राम्हण, अपना समय बिताता था,
अनेक ब्रम्हचारियों को, वेद भी पढ़ाता था।।

कन्या भी अपने पिता की, खूब सेवा करती थी,
और प्रभु का भजन कर, अपना समय बिताती थी।।

एक दिन अचानक कन्या के, शरीर में कीड़े पड़ गये,
यह देख कन्या और माता, अत्यंत दुःखित हो गये।।

कन्या के दुःख से दुखी होकर, माता ने पश्चाताप किया,
अपने पति को वृतांत सुनाकर, इसका फिर कारण पूछा।।

उत्तंक ने समाधिस्थ होकर, कारण पर विचार किया,
और फिर अपनी पत्नि को, सारा वृतांत सुनाने लगा।।

पूर्व जन्म में ये कन्या भी, थी एक ब्राह्मण की कन्या,
किन्तु अपने पाप के कारण, पड़ा उसको ये फल भुगतना।।

इसने रजस्वला अवस्था में, अपने बर्तनों का स्पर्श किया,
इस कारण से इस जन्म में, इसका है ये हाल हुआ।।

धर्मशास्त्र में भी लिखा है, रजस्वला स्त्री रहती,
तीन दिन इतनी अपवित्र, चौथे दिन शुद्ध होती।।

प्रथम दिन चाण्डालिनी, दूजे दिन ब्रम्हघातिनी,
तीसरे दिन धोबिन के जैसी, चौथे दिन शुद्ध होती।।

इस कन्या ने इसके अलावा, एक पाप और किया,
दूसरों को व्रत करते देखा, फिर भी व्रत को नहीं किया।।

ऋषि-पंचमी की पूजा को, स्त्रियों को करते देख लिया,
इसी कारण इस कन्या ने, उच्च कुल में जन्म लिया।।

अन्यथा यह कन्या, चंडाल के घर में जन्म लेती,
नाना प्रकार के दुखों से, जीवन अपना व्यतीत करती।।

ऋषि-पंचमी का व्रत देखो, सभी व्रतों में है ऊँचा,
क्योंकि इसके प्रभाव से, स्त्री को सुख -सौभाग्य मिलता।।

रजस्वला होने की स्थिति में, अज्ञानता से होते पाप,
ऋषि-पंचमी का व्रत करने से, कट जाते हैं सारे पाप।।

इस व्रत की है इतनी महिमा, जो स्त्री भी करती है,
अपने सारे दोष मिटाकर, सारे सुख वो पाती है।।

छठ का हाथा (भादों माह)

आओ सुनायें बात पुरानी, छठ माता की है ये कहानी,
कहतीं थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

एक गाँव में सात थे भाई, उनके पिता और न थी माई,
बहिन एक थी प्यारी-प्यारी, लगती बिल्कुल राजकुमारी।।

धर्म-कर्म के काज है देखो, प्रेम-भाव से वो है करती,
छठ-माता का हाथ लगाकर, दूध-दही के कुंड है भरती।।

भाई करते बहुत दुलार, पर भाभियाँ करतीं दुर्व्यवहार,
भाइयों के बाहर जाते ही, करवातीं झाड़ू-बुहार।।

एक दिन बोली,सुनों ऐ ननदी, पानी भरकर लाओ जल्दी,
सात छेद की मटकी दीन्ही, कैसे पानी लाये ननदी।।

ननदी बैठी कुयें के पास, लगतीं देखो बहुत उदास,
वहाँ आई एक चुहिया रानी, बोली क्या हुआ बेटी रानी।।

ननदी ने सब बात कही, बोली अब क्या करूँ सखी,
चुहिया बोली न हो उदास, एक हल है मेरे पास।।

हम हैं सात चुहियां संग में, जा बैठेंगी सातों छेद में,
घट भर के ले जाना घर, फिर हम हो जायेंगी बाहर।।

ननदी ने ऐसा किया है भाई, भाभियाँ अचरज से भर जाई,
दूजे दिन फिर भाभी बोलीं, लकड़ी काट के लाओ जल्दी।।

बिन रस्सी के बाँध के लाना, ननदी हुई जंगल को रवाना,
लकड़ी काट के बोलीं रोते, गट्ठर कैसे बने है ढोते।।

तभी सर्प एक आया पास, बोले बेटी क्या है बात,
ननदी ने सब बात बताई, बोली अब क्या करूँ मैं भाई।।

बोले बेटी एक काम कर, लिपट जाऊं मैं तेरे गट्ठर,
गट्ठर बाँध के ले जाना घर, फिर मैं हो जाऊँगा बाहर।।

ननदी ने ऐसा किया है भाई, भाभियाँ गुस्से में भर जाई,
एक दिन भाभी बोली ननदी, चाँवल कूट के लाओ जल्दी।।

बिन मूसल के कूट के लाना, टूट न पाये एक भी दाना,
बैठीं ननदी घर के बाहर, नैनन नीर बहे हैं झर-झर।।

इतने में कुछ चिड़ियाँ आईं, बोली क्या है विपदा आई,
बेटी ने सब बात बताई, क्या करूँ मैं समझ न आई।।

बोलीं चिड़ियां बेटी चुप जा, हम करेंगे दूर ये विपदा,
चोंच से अपनी तोड़ें चाँवल, कुट जायेंगे पूरे चाँवल।।

कुटे हुए सब चाँवल देखकर, भाभी आईं गुस्से में भरकर,
एक था उसमें टूटा दाना, भाभी ने फिर दिया ये ताना।।

आधा चाँवल ढूंढ के लाओ, कहाँ गया है ये तो बताओ,
ननदी फिर से हुईं उदास, जा पहुंची चिड़ियों के पास।।

उनसे बोलीं मिले है ताना, सब कहें हम ढूढेंगी दाना,
उनमें थी एक चिड़िया कानी, उसकी आंख में फँसी थी कनि।।

चाँवल ले ननदी घर आई, भाभी को सब बात बताई,
कुछ समय के बाद हे भाई, ननदी ब्याह के लायक हुई जाई।।

पास के गाँव में देख सुघड़ वर, ननदी का कर दिया ब्याह फिर,
भाभी ने कुछ दहेज न दीन्हा, छठ का हाथ उखाड़ कर दीन्हा।।

बहू की विदाई कराकर, अपने गांव को चले बराती,
बहू की ये देख दशा तो, ससुर की छाती जली है जाती।।

बाहर गाँव बरात रुकवाई, सास के पास है खबर जनाई,
एक बात तुम मानो हमारी, ले आना जेवर,कपड़ा भारी।।

छठ माता की कृपा बरस गई, बेटी जेवर से हैं ढंक गई,
सास ने देखा बहू तो भली, ससुर से बोली क्यों करते ठिठोली।।

सुगुणी बेटी पहूंची ससुराल, जहाँ सजे थे स्वागत थाल,
ससुराल की हूई तरक्की, दिन-दूनी और रात चौगुनी।।

अब सुनो मायके का हाल, जो हो गया बहूत बदहाल,
भाभियों के थे कर्म ऐसे, सब कुछ हो गया बर्बाद।।

भाई पूछें क्या है कारण, भावज बोलीं बहन के कारण,
ले गई होगी सब ससुराल, हमें कर दिया है बदहाल।।

भाई पहूंचे बहना के घर, बोले, सब कुछ आ गई लेकर,
बहना बोली प्यारे भैया, मैं न आई कुछ भी लेकर।।

छठ माता का हाथ ही केवल, दिये थे भाभी ने उकेरकर,
गोबर के ही कुंड बने थे, वो ही बस मैं आई लेकर।।

बहना बोली सुनो भैया, भाभी ने है ऐसा कीन्हा,
माँ की मृत्यु के बाद तो, धर्म-कर्म के काज न कीन्हा।।

सूरज चढ़े नींद से उठतीं, उठकर कूटा-पीसी करतीं,
जो मर्जी है वो ही करतीं, पूजा-पाठ है कुछ न करतीं।।

बहिन से सारी बात जानकर, सब लौटे गुस्से में भरकर,
सुबह से उठकर वे चुपचाप, देखने लगे सब क्रिया-कलाप।।

बहिना ने जो बात कही थी, भावज वो ही कर रहीं थीं,
सबको है फिर डांट लगाई, हाथ जोड़ माफी मँगवाई।।

सब करने लगीं धर्म के काज, घर हो गया फिर से आबाद,
हे छठ-माता दया तुम करना, अपना आशीष बनाये रखना"।।।

संतान सप्तमी की कथा

आओ-आओ एक बात बतायें, संतान-सप्तमी की कथा सुनायें,
कहती थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

अयोध्या पुरी में थे एक राजा, नाम उनका नहुष था,
उनकी थी अति सुंदर रानी, नाम चंद्रमुखी था।।

उसी नगर में था एक ब्राम्हण, नाम विष्णु गुप्त था,
उसकी स्त्री बहुत सगुणी, नाम रूपवती था।।

दोनों ही स्त्रियों में तो, परस्पर गहरी मैत्री थी,
सरयू नदी में स्नान करने, संग में जाया करती थीं।।

एक दिन दोनों स्त्रियां जब, स्नान करने सरयू गईं,
वहां पर कुछ व्रती स्त्रियाँ, स्नान करतीं हुईं मिलीं।।

स्नान करके व्रती स्त्रियाँ, मंडल बाँध कर बैठ गईं,
शिव-पार्वती को लिखकर के, उनकी पूजा करने लगीं।।

व्रती स्त्रियां पूजन करके, घर को जब चलने लगीं,
तब चंद्रमुखी और रूपवती, उनके पास पहुँच गईं।।

उनके पास है जाकर पूंछा, किसकी पूजा कर रही थीं,
क्या महत्ता इसकी है, ये तो बतलाओ सखी।।

व्रती स्त्रियाँ उनसे बोलीं, एक बात हम कहें सखी,
हम तो पूजा कर रहीं थीं, भगवान शिव और पार्वती की।।

उनका डोरा बाँध कर, हमने ये संकल्प लिया,
जब तक हम जिंदा रहेंगी, इस व्रत का संकल्प लिया।।

सुख-संतान बढ़ाने वाला, मुक्ताभरण-व्रत कहलाता है,
जो भी इस व्रत को है करता, सुख-सौभाग्य पाता है।।

रानी और ब्राम्हणी दोनों ने, एक बात का निश्चय किया,
आजन्म इस व्रत करने को, शिवजी का डोरा बांध लिया।।

किंतु घर पहुंच कर दोनों, अपना संकल्प भूल गईं,
फिर मरकर रानी हुई वानरी, ब्राम्हणी मुर्गी बनी।।

कुछ समय के बाद दोनों, मनुष्य योनि में जन्मीं,
रानी तो राजा के घर में, ब्राम्हणी,ब्राम्हण के घर जन्मीं।।

ब्राम्हणी का नाम भूषणा, रानी का था ईश्वरी,
मथुरा के राजा थे पृथ्वीनाथ, रानी उनकी पटरानी बनीं।।

राजपुरोहित अग्निमुख से, भूषणा ब्याही गईं,
इस जनम में भी है देखो, दोनों गहरी मित्र बनीं।।

व्रत का नियम भूल जाने से, रानी को बच्चा नहीं हुआ,
किन्तु मध्य आयु में एक, गूंगे-बहरे को जन्म दिया।।

नौ वर्ष का होकर वह भी, काल के गाल समा गया,
रानी का हृदय भी फिर तो, गहन दुख से भर गया।।

इस जन्म में भूषणा ने, नियमपूर्वक व्रत किया,
सुंदर, निरोगी आठ पुत्रों को, उसने तो है जन्म दिया।

पुत्र शोक से दुखी जानकर, वह रानी से मिलने गई,
उसे देख रानी के मन में, घोर ईर्ष्या उत्पन्न हुई।।

ब्राम्हणी को विदा करके, उसके पुत्रों को बुलाया,
और अपनी ईर्ष्यावश, भोजन में है जहर मिलाया।।

भूषणा के व्रत के कारण, उसके पुत्र जीवित रहे,
यह देख रानी का हृदय, क्रोध से अत्यंत जले।।

क्रोध में भरकर रानी ने, अपने दासों को बुलवाया,
पूजा के बहाने उन पुत्रों को, यमुना के किनारे है भिजवाया।।

रानी ने दासों को बुलाकर, कहा तुम एक काम करो,
ब्राम्हणी के पुत्रों को, यमुना जी में ढकेल दो।।

ब्राम्हणी के पुत्रों को, दासों ने ढ़केल दिया,
यमुना जी ने उथली होकर, उनको तो है बचा लिया।।

रानी ने जल्लाद बुलाकर, उनसे कहा एक काम करें,
इन बालकों को ले जाकर, वध-स्थान पर वध करें।।

ब्राम्हणी के व्रत से देखो, इस बार भी वे बच गये,
रानी ने ब्राम्हणी बुलाकर, पूछा कौन से पुण्य करे।।

इतने सारे आघात से भी, पुत्र तेरे बच गये,
कौन से नियम लिये, और कौन से व्रत किये।।

बोली ब्राम्हणी सुनो सखी, ये पूर्वजन्म की बात है,
मुझको सब मालूम है, पर तुमको कुछ न याद है।।

पहले जन्म में हम दोनों में, खूब परस्पर मैत्री थी,
तुम अयोध्या की थी रानी, और मैं एक ब्राम्हणी थी।।

सरयू नदी के पावन तट पर, शिव-पार्वती का डोरा बाँधा था,
संतान-सप्तमी व्रत करने का, संकल्प भी लिया था।।

घर आकर के हम दोनों ही, इस व्रत को भूल गईं,
आप फिर अगले जन्म में, वानरी फिर बनीं।।

आखिरी समय में मुझे, व्रत की याद आ गई,
इसलिये मरकर भी मैं, बहु सन्तानवाली मुर्गी बनी।।

पक्षी की योनि है पाकर, व्रत तो मैं कर ही न सकी,
किन्तु स्मरण रखने से ही, आठ पुत्रों की माँ बनी।।

इस व्रत को करने के कारण, मेरे इतने पुत्र हैं,
इसके ही प्रभाव से, सब दीर्घायु और स्वस्थ हैं।।

ब्राम्हणी के कहने से, रानी को सब याद आ गया,
उसने भी संतान-सप्तमी का, नियमपूर्वक व्रत किया।।

बाद में फिर रानी को भी, पुत्र-पौत्रादि का सुख मिला,
और अंत में फिर उसे, शिव-लोक का वास मिला।।

इस व्रत की है इतनी महिमा, सबको संतान-सुख मिले,
सदा निरोगी वो हैं रहते, धन-धान्य भी खूब मिले।।

गाजबीज की कथा

अनंत चतुर्दशी (रोट-पूजन) 1

आओ-आओ एक बात सुनायें, गाजबीज की कथा सुनायें,
कहतीं थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

एक थे राजा एक थी रानी, दूर देश में रहते थे,
राजा जी भी कुशलता से, राज्य चलाया करते थे।।

कुछ समय के बाद ही देखो, राजा ने दूजा ब्याह कर लिया,
दूजी रानी के आते ही, पहली से मुख मोड़ लिया।।

कुछ समय के बाद ही देखो, बड़ी रानी का ये हाल हुआ,
राजा ने उसको रहने को, दूजे महल में भेज दिया।।

राजा जी छोटी रानी को, बहुत ज्यादा चाहते थे,
किन्तु बड़ी रानी के लिये, बस एक सेर आटा भेजते थे।।

कुछ समय के बाद तो देखो, उसको भी आधा कर दिये,
और अब बड़ी के लिये, आधा सेर आटा भेजने लगे।।

और फिर तो बाद में, उसको भी आधा कर दिये,
पाव सेर अनाज ही, रानी को देने लगे।।

बड़ी रानी सरल,सुशीला, कुछ भी वो न कहती थी,
अपने भाग्य का लिखा मानकर, चुपचाप सहन कर जाती थी।।

एक था उसका नियम रोज का, जिसे वो अपनाती थी,
एक छोटी सी रोटी रोज वो, गाय के लिये बनाती थी।।

छोटी रानी तो ऐसी थी, धर्म-कर्म कुछ न करती,
दान-पुण्य की बात तो छोड़ो, ईश्वर को भी न भजती।।

एक दिन राजा जी देखो, शिकार खेलने वन को गये,
शिकार का पीछा करते-करते, बहुत दूर वे निकल गये।।

पहुँच गये गहन वन में, सबका साथ छूट गया,
थोड़ी देर में वहाँ पर, अंधेरा भी घिरने लगा।।

और अचानक आसमान में, काले बादल छा गये,
तेज चमकती बिजली के संग, गर्जना करने लगे।।

ऐसी बिजली-पानी देखकर, राजा जी घबरा गये,
किसी सुरक्षित स्थान की, तलाश वो करने लगे।।

और अकस्मात देखो, बिजली भी गिरने लगी,
राजा जी के ऊपर ही, जाकर वो छाने लगी।।

तभी एक चमत्कार हुआ, एक गोल रोटी आ गई,
राजा जी के सिर के ऊपर, जाकर वो छा गई।।

जहां-जहां राजा जी जाते, वहीं-वहीं जाने लगी,
गिरती हुई गाज से वो, राजा की रक्षा करने लगी।।

कुछ समय के बाद ही, मौसम जब ठीक हुआ,
राजा जी ने पेड़ के नीचे, फिर रात्रि विश्राम किया।।

प्रातःकाल राजा उठकर, अपने राज्य को जाने लगे,
सैनिक भी राजा को ढूंढते, तभी वहाँ पर आ गये।।

सैनिकों के संग राजा जी, राज्य को चले गये,
राजमहल में पहुंच कर के, सारा वृतांत सुनाने लगे।।

राजा ने छोटी रानी को, पूरी घटना कह सुनाई,
कहने लगे एक रोटी ने, मेरी तो है जान बचाई।।

रानी से पूछें राजा जी, तुमने ऐसा क्या किया,
जिस के कारण तो देखो, मेरे संग अच्छा हुआ।।

रानी बोली मैं क्या जानूँ, मैं तो कुछ न करती हूं,
न ही रोटी के बारे में, मैं कुछ भी जानती हूं।।

बड़ी रानी के महल में, राजाजी फिर पहुँच गये,
और रोटी के बारे में, उससे वे पूछने लगे।।

रानी बोली सुनो राजाजी, मैं तो न कुछ करती हूं,
मेरे पास तो कुछ भी नहीं है, दान-पुण्य न करती हूं।।

अनाज भेजते पाव सेर जो, उसी की रोटी बनाती हूँ,
उसमें से एक छोटी रोटी, गाय को रोज निकालती हूँ।।

पूरी बात समझ गये राजा, अपनी गलती मान गये,
हाथ जोड़ कर रानी से फिर, क्षमा-याचना करने लगे।।

राजाजी बड़ी रानी को, महल में लेकर आ गये,
पूरे मान-सम्मान से, फिर उनको रखने लगे।।

उसी समय से सब कोई देखो, गाजबीज का पूजन करने लगे,
राजा-रानी के संग-संग, प्रजा जन भी व्रत रखने लगे।।

गाजबीज की पूजा से, सबके ही संकट टलते हैं,
ऐसी विपत्ति के समय, प्रभु सबकी रक्षा करते हैं।।

रोट की कथा - भाग 2

आओ-आओ एक बात सुनायें, रोट की हम कथा सुनायें,
कहतीं थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

एक गांव में एक माई, बेटे-बहू संग थी रहती,
एक दिन माई बेटे से, अनाज बोने को बोली।

बोली बेटा चार माह हम, खेत की रखवाली करेंगे,
बेटा बोला ठीक है माई, हम मड़ैया बनवा देंगे।।

माँ के लिए खाना बनाने, उसने बहू से बोल दिया,
चापर के चार लड्डू बनाकर, बहू ने कपटपन दिखा दिया।।

लड्डू लेकर माई खेत पर, मड़ैया में रहने लगी,
पहले महिना आये आषाढ़ जू, बिजली भी गरजने लगी।।

बोले माई भूख लगी, माई पूछे कौन आये,
बोले हम आषाढ़ जू, माई बोली अच्छे आये।।

सब लोग सिया आठें मना कर, अठवाई फिर हैं चढ़ायें,
बाराजीत की पूजा करके, देवी-देवता को मनायें।।

माईने आषाढ़ जू को, एक लड्डू खाने दिया,
और उन्होंने मड़ैया का, कोना सोने का कर दिया।।

दूजे महीना खूब गरज कर, देखो सावन जू आये,
बोले माई भूख लगी, माई बोली अच्छे आये।।

सावन सोमवार,नाग पंचमी, तीज,राखी मनायेंगे,
ऐसा कहकर बोली माई, आपको लड्डू खिलायेंगे।।

लड्डू खाकर सावन जू, देखो फिर हैं चले गये,
जाते-जाते मड़ैया का, कोना सोने का कर गये।।

तीजे महीना भादों जू, देखो खूब गरज के आये,
बोले माई भूख लगी, माई बोली अच्छे आये।।

हरछठ और जन्माष्टमी, तीजा,रोट पूज लिये,
फिर भादों जू भी लड्डू खाकर, तीजा कोना सोने का कर गये।।

चौथे महीना क्वांर जू, खूब गरज के हैं आये,
बोले माई भूख लगी, माई बोली अच्छे आये।।

सब लोग पुरखों को मना कर, महालक्ष्मी मनायेंगे,
नवरात्रि और दशहरा भी, साथ में मनायेंगे।।

लड्डू खाकर क्वांर जू चौथा, कोना सोने का कर गये,
और माई ने चार माह ये, निराहार ही काट लिये।।

चार माह के बाद देखो, बेटा-बहू खेत पर आये,
देखा तो सोने की मड़ैया, हीरा-मोती अटे पड़े।।

अगले वर्ष बहू ने अपनी, मां को खेत पर भेज दिया,
शुद्ध घी के लड्डू बांधे, किंतु उसकी मां ने ऐसा किया।।

आषाढ़, सावन, भादो, क्वांर को, ठेंगा दिखाकर भगा दिया,
चारों ने उसको सींग लगाकर, उसकी मड़ैया को गिरा दिया।।

सूअर के जैसी हो गई काया, खेती भी नष्ट हो गई,
चार सींग उसके हैं लग गये, हू-हू करके फिरने लगी।।

चार माह के बाद तो, लड़का-बहू खेत पर आये,
मां की हालत देखकर, बहू देखो खूब गुस्साये।।

माई बोलीं मैं क्या जानूँ, चापर के चार लड्डू दिये,
आषाढ़, सावन, भादों और, क्वांर जू को खिला दिये।।

बहू की मां से पूछा तो, बोली भूखी रहती क्या,
उन चारों को मैंने तो, ठेंगा दिखा कर भगा दिया।।

बेटा बोला मेरी मां ने, दान-पुण्य के काम किये,
तेरी मां ने जैसा किया, अपनी करनी वो भुगते।।

महालक्ष्मी की कथा

"आओ-आओ एक बात बतायें, महालक्ष्मी की कथा सुनायें,
कहतीं थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

हस्तिनापुर में थीं दो रानी, गांधारी और कुंती रानी,
पांच पुत्र थे कुंती जी के, सौ पुत्र गांधारी जी के।।

महालक्ष्मी का शुभ दिन आया, नगर में मंगल उत्सव छाया,
गांधारी के महल में देखो, कैसा हर्षोल्लास है छाया।।

सौ पुत्र लाये थे माटी, जिनसे बना विशाल हाथी,
छप्पन-भोग पकवान बने थे, सोने के तो कलश सजे थे।।

ढोल-नगाड़े बाजन लागे, नर-नारी सब नाचन लागे,
हुआ कोलाहल देखो भारी, निकली गजराज की सवारी।।

गांधारी ने देखो तो, कितना है अभिमान किया,
गजराज के पूजन को, कुंती को न्योता नहीं दिया।।

अपने महल में कुंती माई, उनके मन में चिंता छाई,
पूछे पुत्र क्या हुआ माई, मुख पर क्यों उदासी छाई।।

बोलीं कुंती सुनो हे पुत्र, आज महालक्ष्मी का दिवस,
कौरव पूरे सौ है भाई, मिलकर विशाल गजराज बनाई।।

महारानी गांधारी ने भी, मुझको खबर नहीं जनाई,
तुम तो केवल पांच हो भाई, कैसे मूरत है बन जाई।।

अर्जुन बोले इतनी सी बात, आप न हो बिल्कुल उदास,
इंद्रदेव को खबर जनाऊँ, साक्षात ऐरावत बुलवाऊं।।

इंद्र को चिट्ठी भेजी सादर, ऐरावत को भेजो प्रियवर,
इंद्र कहें सीढ़ी बनवाओ, जिससे ऐरावत ले जाओ।।

धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाई, स्वर्ग तक सीढ़ी बनाई,
इंद्र ने भेजा ऐरावत को, सीढ़ी के रास्ते देखो।।

भू लोक पर आये ऐरावत, सबने उनका स्वागत कीन्हा,
गजराज ने कृपा बरसाकर, खूब आशीष संग में दीन्हा।।

कुंती ने भी भाँति-भाँति के, छप्पन-भोग हैं खूब बनाये,
ऐरावत की पूजा करके, उनको तो हैं खूब खिलाये।।

शंख-मृदंग है बाजन लागे, पुष्प भी तो खूब हैं बरसे,
उनकी पीठ पर बैठीं कुंती, नगर भ्रमण को ऐरावत निकले।।

हे गजराज कृपा बरसाना, हम सबकी तो लाज राखना,
बच्चों की है रक्षा करना, अपना आशीष बनाये रखना।।

महालक्ष्मी मैया मेरी, खूब कृपा बरसाते रहना,
धन-धान्य के भंडार भरना, सुख-सौभाग्य बनाये रखना।।

कथा के फिर अंत में देखो, अक्षत छोड़तीं सोलह बार,
और साथ में ये बोल भी, कहतीं जातीं थीं हर बार।।

अमोती-दमोती रानी, पोला-परपाटन गाँव, जहाँ के मंगलसेन राजा,
बंभन बरुआ कहें कहानी।।
सुनो हे महालक्ष्मी देवी रानी, तुमसे कहतीं हमसे सुनतीं,
सोलह बोल की एक कहानी।।

करवा-चौथ की कथा

आओ-आओ एक बात सुनायें, करवा-चौथ की कथा सुनायें,
कहती थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

दूर देश में रहता था, एक सम्पन्न साहूकार,
उसके सात पुत्र,एक पुत्री, आपस में करते थे प्यार।।

सातों भाई अपनी बहन को, करवा कहकर बुलाते थे,
पहले उसको खाना खिलाते, बाद में स्वयं ही खाते थे।।

शादी के बाद एक दिन, बहन मायके आई हुई थी,
शाम को भाई घर पर आये, देखा बहन बहुत व्याकुल थी।।

सभी भाई खाने को बैठे, बहन से आग्रह करने लगे,
बहन बोली भैया आज मैं, करवा-चौथ का व्रत रखें।।

बहन बोली आज मैं, निर्जला व्रत रखती हूँ,,
और खाना आज मैं, चाँद देखकर खाती हूँ।।

जैसे ही चाँद निकलेगा, मैं उसको अर्ध्य दूँगी,
और उसके बाद ही, खाना भी मैं खा लूँगी।।

चूंकि चाँद नहीं निकला है, भूख-प्यास से व्याकुल है,
छोटे भाई से बहन की हालत, देखी ही नहीं जाती है।।

छोटे भाई ने प्यार के कारण, देखो फिर ऐसा किया,
चलनी की ओट में, एक दीपक रख दिया।।

एक पीपल के पेड़ पर, उस चलनी को रख दिया,
दूर से देखकर ऐसा लगा, कि चौथ का चाँद निकल रहा।।

छोटे ने बहन से बोला, चलो चाँद को देख लो,
तुम उसे अर्ध्य देकर, खाना जल्दी भी खा लो।।

चाँद को अर्ध्य देकर,बहन खाना खाने लगी,
पहला निवाला जाते ही, उसको छींक आ गई।।

दूसरा निवाला डाला, उसमें बाल निकल आया,
तीसरे के डालते ही, पति की मौत का पैगाम आया।।

यह समाचार सुनकर, बहन बहुत बौखला गई,
तब उसकी भाभी ने उसको, पूरी सच्चाई बता ही दी।।

सच्चाई सुनते ही करवा ने, एक निश्चय है किया,
अपने पाप का प्रायश्चित, करने का भी वचन लिया।।

अपने पति का अंतिम संस्कार, उसने होने नहीं दिया,
अपने सतीत्व से उनको, पुनर्जीवित करने का प्रण लिया।।

करवा पूरे एक वर्ष तक, शव के पास बैठी रही,
पति के ऊपर ऊगने वाली, सुई जैसी घास जोड़ती रही।।

अगले वर्ष फिर करवा-चौथ का, सब भाभियों ने व्रत रखा,
आशीष लेने आईं भाभियाँ, तो उसने ऐसा कहा।।

"यम सुई ले लो,पिय सुई दे दो, मुझे भी है सुहागिन बना दो",
ऐसा आग्रह सबसे किया, किन्तु पांच भाभियों ने तो, एक दूसरे पर टाल दिया।।

जैसे ही छटवीं भाभी आई, उसने है एक बात बताई,
व्रत टूटा छोटे भाई से, ये सब बोलो उसकी पत्नि से।।

व्रत टूटा उसके पति से, उसी में इतनी शक्ति है,
तेरे पति को अब वो ही, जिंदा भी कर सकती है।।

जब वो तेरे पास में आये, तुम उसको पकड़ लेना,
जब तक पति जिंदा न होवे, तुम उसको तो मत छोड़ना।।

छोटी भाभी के आने पर, करवा उससे कहने लगी,
लेकिन वो भी तो है देखो, टाल-मटोली करने लगी।।

करवा ने उसको है पकड़ा, और मिन्नत करने लगी,
पति को जिंदा करने की, प्रार्थना भी करने लगी।।

भाभी ने खूब प्रयास किये, किन्तु करवा ने नहीं छोड़ा,
बोली तुम ही बना सकती हो, मेरे पति का मुझसे जोड़ा।।

अंत में उसकी तपस्या देख, भाभी का मन पसीज गया,
उसके पति को जिंदा करने का, निश्चय भी फिर कर लिया।।

उसके पति को जीवित करने, अपनी ऊँगली को चीर दिया,
उसमें से अमृत निकालकर, पति के मुख में डाल दिया।।

करवा का पति तुरंत ही, देखो जिंदा हो गया,
और फिर जोर-जोर से, श्री गणेश बोलने लगा।।

प्रभु की कृपा से देखो, करवा सुहागिन हो गई,
और फिर से नियमपूर्वक, व्रत को वो करने लगी।।

हे श्री गणेश,हे मां गौरी, सदा आपका आशीष मिले,
हम सबको करवा के जैसे, चिर सुहाग का वरदान मिले।।

बछबारस की कथा

(गौवत्स-द्वादशी)

आओ-आओ एक बात बतायें, बछवारस की कथा सुनायें,
कहतीं थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

एक गांव में सास बहू थी, संग में वो रहती थी,
सास तो देखो रोज ही, खेती के काम भी करती थी।।

उनके घर में संग में, गाय-बछड़ा भी रहता था,
गाय का नाम गहूआं था, बछड़े का नाम धनिया था।।

एक दिन सास बहू से बोली, आज तुम एक काम करना,
गहूआं को है पीस लेना, धनिया को है राँध लेना।।

बहू तो देखो कैसी थी वह, गाय-बछड़ा ही समझ लिया,
गाय तो चरने को गई थी, बछड़े को काटकर पका लिया।।

सांझ ढले जब सास लौटी, पूछती खाना बना लिया,
बहू बोली आपके कहने पर, धनिया को है पका लिया।।

बहू बोली सुनो माई, आपने ही था बोला,
गहूँआ को है पीस लेना, और धनिया को रांध लेना।।

गहूँआ तो चरने गई थी, उसका इंतजार कर रही,
फिर अंदर से हांडी लाकर, सास को दिखाने लगी।।

उसे देखकर सास का, कलेजा तो मानो फट पड़ा,
बोली इसको ले जाकर, घूरे में दबाकर आ।।

दरवाजा बंद करके माई, भीतर को है दौड़ पड़ी,
प्रभु के चरणों में जाकर, औंधी वो गिर पड़ी।।

बोली प्रभु दयानिधान, मेरी विपदा आप हरो,
बहू को इस पाप से, अब आप ही मुक्त करो।।

सांझ हुई जब गाय लौटी, घूरे पर जाकर खड़ी हुई,

जहां पर हंडी गड़ी हूई थी, सींग से कुरेदने लगी।।

माई की सच्ची भक्ति देख, प्रभु ने चमत्कार किया,
मरे हूए बछड़े को देखो, फिर से जीवित कर दिया।।

गाय-बछड़ा दोनों आकर, द्वार पर रंभाने लगे,
किन्तु द्वार के पट तो देखो, सांझ ढले भी बंद पड़े।।

फिर देखो दरवाजे पर, ठक-ठक की आवाज आई,
दरवाजा तो खोलो माई, पड़ोसन ने आवाज लगाई।।

बाहर देखो गाय-बछड़ा, दोनों कितने रंभा रहे,
सांझ ढले घर के दरवाजे, क्यों आपने बंद करें।।

पड़ोसन से है सास बोली, ऐसा मजाक क्यों कर रही,
कहां से आए गाय-बछड़ा, बहू ने ऐसी करनी करी।।

बाद में फिर गाय-बछड़े की, रंभाने की आवाज आई,
माई देखो तो जल्दी से, दरवाजे पर दौड़ी आई।।

दरवाजा खोला तो देखो, बछड़े के संग गाय खड़ी,
माई तो रो-रो कर देखो, दोनों को प्यार करने लगी।।

गाय-बछड़े को अंदर लाकर, हल्दी-कुमकुम से तिलक किया,
हाथ जोड़कर शीश झुका कर, प्रभु को धन्यवाद दिया।।

उसी दिन से द्वादशी को, गाय-बछड़े का पूजन होने लगा,
उस दिन से गेहूं,धना भी, सबने खाना छोड़ दिया।।

इस व्रत की है इतनी महिमा, जो भी इसको करता है,
मनचाहा वरदान है मिलता, सुख सौभाग्य भी मिलता है।।

--

धनतेरस की कथा

आओ आओ एक बात सुनायें, धनतेरस की कथा सुनायें,
कहतीं थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

एक दिन यमराज दूत से पूछें, एक बात कहो विस्तार,
प्राणियों के प्राण हरते, मेरी आज्ञा के अनुसार।।

प्राणों को हरने में, दया आती है या नहीं,
सही बात बतलाना मुझको, क्या ऐसा हुआ है कभी।।

दूत बोले हाँ महाराज, दया आती है कई बार,
एक राजा की बात बताएं, याद आती बारंबार।।

हंस नामक प्रतापी राजा, शिकार खेलने वन को गए,
साथियों से बिछड़ कर वे, दूसरे राज्य में पहुंच गए।।

उस राज्य के राजा हेम ने, राजा हंस को बुलवा लीन्हा,
खूब आवभगत करके, उचित आसन उन्हें दीन्हा।।

हेम राजा के यहां फिर, पुत्र का जन्म हुआ,
छटी के दिन देखो तो, मां देवी का प्राकट्य हुआ।।

छठी माता बोली राजा से, सुनो मेरी एक बात,
आज से चार दिन बाद, पुत्र होगा मृत्यु को प्राप्त।।

राजा हंस को ज्ञात हुआ जब, वह उस बालक को ले गये,
उसकी रक्षा की खातिर, यमुना की खोह में छिपा दिये।।

जब वह बालक युवा हुआ, विवाह उसका संपन्न हुआ,
किंतु विवाह के चौथे दिन, हमने उसके प्राणों को हर लिया।।

मंगल अवसर के बीच में, शोक जनक कार्य किया,
किंतु हम परतंत्र थे, घृणित कार्य हमने किया।।

हे नाथ कृपा करके, कोई उपाय बता दीजिए,
ऐसी अनायास विपत्ति से, प्राणी उद्धार पा सके।।

दीन वचन सुनके यमराज ने, धनतेरस का महत्व बताया,
पूजन और दीपदान का, महत्व विस्तार से समझाया।।

यमराज बोले समझाकर, दूत सुनो तुम बात हमारी,
धनतेरस के व्रत से देखो, ऐसी विपदा कभी न आती।।

जो भी प्राणी धनतेरस को, पूजन और दीप दान करेंगे,
अकाल मृत्यु कभी न पाकर, दीर्घायु को प्राप्त करेंगे।।

धनतेरस को पूजन होता, वैदिक देव यमराज का,
और साथ ही पूजन होता, भगवान धन्वंतरि का।।

देव पूजा समाप्त कर, पित्र पूजा करना चाहिए,
लक्ष्मी पूजन के बाद, भोजन करना चाहिए।।

मठ, मंदिर, कुआं, बावड़ी, घाट, कोट, गौशाला में,
तीन दिन पर्यंत बराबर, दीपक रखना चाहिए।।

अश्वशाला, गजशाला, और बाग, मार्ग में,
प्रदोष काल में भी यहां पर, दीपक रखना चाहिए।।

इस पूजन को करने से, सुख, सौभाग्य, स्वास्थ्य मिलता,
और साथ-साथ प्राणी भी, दीर्घायु को प्राप्त भी होता।।

दीपावली

आओ-आओ एक बात बतायें, दीवाली की कथा सुनायें,
कहतीं थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

एक गाँव में सात थे भाई, जिनके पिता और न थी माई,
रूखी-सूखी रोटी खाते, दुःख से अपना समय बिताते।।

बड़े भाई की हुई सगाई, गौना हुआ बहू घर आई,
घर का हाल देख घबराई, किस्मत का ये आईना भाई।।

गुणी बहुत थी और मिताई, बोली बहू सुनो सब भाई,
साँझ ढले जब घर को आना, जो भी मिले वही ले आना।।

एक दिन छोटा बहुत घबराया, काम न उसको कुछ मिल पाया,
राह चले मृत अजगर पाया, उसे उठाकर घर ले आया।।

मृत अजगर छप्पर पर फैंका, करने लगी वो चूल्हा-चौका,
राजा की थी प्यारी रानी, रोज सरोवर आये नहाने।।

मोती माल किनारे रखकर, जा उतरी पानी के भीतर,
एक थी चील वहां पर आई, चोंच में दबा फुर्र हो जाई।।

अजगर पड़ा देख ओसारे, माला को वहीँ छोड़ दिया रे,
अजगर को चोंच में दबाकर, चील तुरंत फुर्र हो जाई।।

जब रानी बाहर को आई, माल न देख बहुत घबराई,
संदेशा राजाजी पहुंचा, राजा ने दुंदुभी पिटवाई।।

सभी प्रजाजन सुनें ध्यान से, राजा का फरमान है ये,
जो भी मोतिन माल लायेगा, मुँह माँगा इनाम पायेगा।।

रात हुई बहू ने देखा, ओसारे पर कुछ था चमका,
मोतियन माल देख घबरा के, जा पहुंची राजा के द्वारे।।

राजा बोले बहू तुम आओ, जो मांगो सो वो ही पाओ,
सयानी बहू बहुत थी सुगुणि, बोली राजा इतनी अर्जी।।

दीवाली का शुभ दिन आये, जितना तेली तेल बनाये,
रुई,कुम्हार के दीपक सारे, सारा मेरे घर पर आये।।

दीवाली की शुभ घड़ी आई, बहू की झोपड़ी जगमगाई,
सारे गाँव में छाया अन्धेरा, इकलौता रोशन था झोपड़ा।।

पहले पहर लक्ष्मी आईं, पूरे गाँव में घूमतीं आईं,
बोली बहू खोलो किवाड़, हम आये हैं तेरे द्वार।।

बहू चतुर थी बोली माई, कब तक को तुम घर में आईं,
लक्ष्मीं बोलीं एक पीढ़ी तक, बहू ने द्वार न खोले भाई।।

दूजे पहर फिर लक्ष्मी आईं, बोली दो पीढ़ी तक आईं,
बहू बंद करके फिर द्वार, जा बैठी अंगना के पार।।

तीसरे पहर फिर लक्ष्मी आईं, बोली सात पीढ़ी तक आईं,
बहू बोली क्या है भरोसा, आज यहाँ कल वहां हैं डेरा।।

चौथे पहर फिर लक्ष्मी आईं, बोलीं बहू सुनो एक बात,
जब तक होगा सत्य और धर्म का साथ, तब तक होगा मेरा साथ।।

आँगन से दौड़ी बहू आई, मैया के चरणों गिर जाई,
बोली मैया शीश झुकाऊँ, तेरी कृपा मैं हरदम पाऊँ।।

हे लक्ष्मी मैया मेरी, हम पर सदा कृपा बरसाना,
धन-धान्य की वर्षा करना, सुख-सौभाग्य बनाये रखना।।

अन्नकूट की कथा

आओ-आओ एक बात बतायें, अन्नकूट की कथा सुनायें,
कहतीं थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

"द्वापर-युग की बात है भाई, ग्वाल-बाल और कृष्ण-कन्हाई,
जा पहुंचे गौओं के संग में, गोवर्धन पर्वत की तराई।।

अपनी-अपनी पोटली खोल के, रोटी भी मजे से खाई,
भोजन के उपरांत ग्वालों ने, फूलों का मंडप है बनाई।।

कान्हाजी ने झटपट पूंछा, क्या होना है आज ये भाई,
ग्वाल-बाल बोले सब मिलकर, आज ब्रज में आनंद है छाई।।

तैंतीस-कोटि देवता हमारे, उनके अधिपति इंद्र विराजे,
छप्पन-भोग बनेंगे घर-घर, इन्द्रोज नामक यज्ञ है भाई।।

जो भी इंद्र-मख को करता, बहुत खुशी है वो ही पाता,
न अतिवृष्टि,न अनावृष्टि, प्रजा बहुत सुख भोगे भाई।।

गोपों की जब बात सुनी तो, हँसकर बोले प्यारे कान्हा,
अन्न और वृष्टि का कारण, गोवर्धन पर्वत है भाई।।

गोकुल और मथुरा के वासी, सदा से इसको पूजते भाई,
इंद्र से बलवान यही है, गोवर्धन को पूजो भाई।।

ग्वाल-बाल सब सहमत हो गये, यशोदा जी तक बात जनाई,
नंदबाबा की प्रेरणा से ही, गोपों की है सभा कराई।।

कान्हाजी ने सब लोगों को, गोधन की महिमा बतलाई,
दूध-दही और छप्पन-भोग से, गोधन की पूजा करवाई।।

अपने आधिदैविक रूप से, गोधन में प्रवेश कर जाई,
गोपों के छप्पन भोग को, गिरिराज ने भोग लगाई।।

उनका शुभ आशीर्वाद तो, सबने देखो खूब है पाया,
अपनी पूजा सफल मानकर, सबने उत्सव खूब मनाया।।

इंद्र महोत्सव देखन नारद, ब्रज को गमन करे हैं भाई,
इंद्र की पूजा क्यों नहीं कीन्हीं, सबसे यही पूछते जाई।।

बोले गोप-गोपियाँ मिलकर, कान्हा जी ने बात बताई,
गोधन है अधिक बलवान, सो इनकी पूजा कीन्हीं भाई।।

मुख-मलीन कर नारद देखो, इंद्रलोक गमन कर जाई,
बोले श्रीकृष्ण ने देखो, गोधन की पूजा करवाई।।

इन्द्रोज को बंद कराकर, गोवर्धन बलवान बताई,
क्या पता भविष्य काल में, तुम पर ही कर दें वो चढ़ाई।।

सुनकर नारद के वचनों को, इंद्र के मन में क्षोभ भर जाई,
कोप करा फिर देवराज ने, मेघों को तुरंत बुलवाई।।

देवराज बोले मेघ तुम, गोकुल पर है करो चढ़ाई,
ऐसी वर्षा तुम है कर दो, ब्रजमंडल का नाश हो जाई।।

मेघराज ने आज्ञा पाकर, प्रलयकारी वर्षा है कराई,
गोप-ग्वाल सब हैं घबराकर, श्रीकृष्ण की शरण में जाई।।

उनके आर्तनाद को सुनकर, बोले कान्हा सुनो हे भाई,
गोवर्धन की शरण में आओ, वही रक्षा करेंगे भाई।।

सब गोकुलवासी हैं मिलकर, पहुंचे गोवर्धन की तराई,
गोवर्धन को छतरी जैसा, कान्हा ने ऊँगली पे उठाई।।

सात दिनों तक बरसे बादल, ब्रजवासिन पर बूँद न आई,
गोवर्धन की छाया से तो, सबकी है फिर जान बचाई।।

ऐसा कौतूहल देख के तो, इंद्र भी अचरज से भर जाई,
तब देवर्षि ब्रम्हा जी ने, कृष्णावतार की बात बताई।।

ब्रम्हा जी की बात है सुनकर, इंद्र स्वयं ब्रजधाम में जाई,
अपने अहंकार को त्याग के, कृष्ण के चरणों में गिर जाई।।

दिन सातवें गोवर्धन को, धरती पर रखा है भाई,
प्रतिवर्ष गोधन को पूजो, सबसे कहते कृष्ण-कन्हाई"।।

जो भी इस पूजा को करते, सब खुशियां वो पाते हैं,
उनके घर धन-धान्य के, भंडार भी भर जाते हैं।।

हे गिरिराज कृपा बरसाना, धन-धान्य की वर्षा करना,
हम सबकी तो लाज राखना, सुख-सौभाग्य बनाये रखना।।

औसान बीबी की कथा

(सुहागलें)

आओ-आओ एक बतायें, औसान बीबी की कथा सुनायें,
कहतीं थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

दूर देश में एक राजाजी, यश-वैभव के स्वामी थे,
बहुत कुशलता पूर्वक वो, राज्य चलाया करते थे।।

धन-धान्य की वर्षा होती, प्रजा भी सुखी रहती,
उनके राज में कभी किसी को, कोई कमी ही न होती।।

राजा जी की थी एक कन्या, और एक थे राजकुमार,
दोनों ही उनके लाड़ले, मिलता खूब प्यार-दुलार।।

देखते ही देखते फिर, राजकुमारी बड़ी हो गई,
राजाजी सोचने लगे, अब शादी योग्य हो गईं।।

देखकर सुयोग्य वर, ब्याह उनका तय किया,
शुभ मुहूर्त देखकर, ब्याह भी है कर दिया।।

सोना-चाँदी हीरा-मोती, खूब दान-दहेज दिया,
हाथी-घोड़ा, दास-दासियों, को भी संग में भेज दिया।।

धूम-धाम से हुई विदाई, बराती अपने नगर चले,
खूब आवभगत हुई सबकी, खुशियों से चेहरे खिले।।

पड़ाव डला रास्ते में तो, सब विश्राम करने लगे,
हाथी-घोड़ा बाँधने की, व्यवस्था भी करने लगे।।

हाथी-घोड़ा बाँधने का, प्रयास उन्होंने खूब कीन्हा,
कहने लगे राजाजी ने, खूँटा तक है न दीन्हा।।

हुआ सवेरा सब देखो फिर, अपने नगर को चले,
कुलवधू के स्वागत की, सब तैयारी करने लगे।।

बारात को सकुशल पहूँचाकर, दास-दासी लौट गये,
राजाजी के दरबार में, जाकर वो हाजिर हूए।।

बोले राजा सेवकों से, वहां का तुम हाल कहो,
कोई शिकायत रही क्या, सारी बात हमसे कहो।।

सेवक बोले हे राजाजी, सब कुछ तो अच्छा रहा,
किन्तु हाथी-घोड़ा बाँधने का, खूँटा आपने नही दिया।।

सेवकों की बात सुनकर, राजा को भारी दुख हूआ,
बोले इतना दहेज दीन्हा, खूंटे के कारण सुना दिया।।

आहत मन से बोले राजा, फरमान जारी किया जाये,
राजमहल में कन्या होवे, तुरंत उसको मार दिया जाये।।

कुछ समय के बाद कुंवर जी, एक दिन माँ से यूँ बोले,
राजमहल में नहीं हैं कन्या, इसका आप राज खोलें।।

रानी बोली सुनो कुंवर जी, राजा का आदेश ये,
कन्या के पैदा होते ही, तुरंत उसे मार दीजिये।।

अगली बार कन्या होते ही, कुंवर जी उसे ले गये,
राजा की चोरी से उसका, पालन-पोषण करने लगे।।

धीरे-धीरे बड़ी हो गईं, कन्या राजकुमारी बन गईं,
एक दिन अपने बाल सुखाने, महल की छत पर पहूँच गईं।।

उसी समय राजाजी की भी, नजर उन पर पड़ गई,
बोले कौन है ये कन्या, यहाँ कहाँ से आ गई।।

बोली रानी सुनो राजाजी, आपकी ही बेटी है,
राजा पूछें किसकी आज्ञा से, आज तक ये जीवित है।।

राजाजी से रानी बोलीं, कुंवर जी की आज्ञा है,
उनके ही आदेश से, आज तक ये जीवित है।।

सुनते ही राजाजी ने फिर, फरमान जारी कर दिया,
कुंवर जी और राजकुमारी को, देश निकाला दे दिया।।

कुंवर जी और राजकुमारी, देश से निकल गये,
चलते-चलते दोनों ही फिर, एक जंगल में पहुँच गये।।

वहीं पर झोपड़ी बनाकर, दोनों ही रहने लगे,
और ऐसे ही फिर उनके, दिन व्यतीत होने लगे।।

राजकुमारी का मन बहलाने, चिड़ियाँ उन्होंने पाल लीं,
और उनकी जवाबदारी, राजकुमारी को सौंप दी।।

उनके दाना-पानी का, राजकुमारी ध्यान रखतीं,
कुंवर जी के चले जाने पर, उनके संग में खेलतीं।।

एक दिन कुँवर के जाते ही, राजकुमारी सो गईं,
ठंडी-ठंडी बयार चली तो, तेज नींद ही लग गई।।

सांझ ढले जब नींद खुली तो, राजकुमारी घबरा गईं,
झटपट दौड़ लगाकर वो, चिड़ियों के पास पहुंच गईं।।

चिड़ियों को जाकर के देखा, वो बिल्कुल कुम्हला गईं,
उनको देखकर राजकुमारी, जोर-जोर से रोने लगीं।।

राजकुमारी बैठ के सोचें, मैं अकेली क्या करूँ,
भाई के वापस आने पर, उनको क्या जवाब दूं।।

एक माई ने उनसे पूछा, बेटी क्यों रोती हो धाय,
रोते-रोते बात बताई, बोलीं अब क्या करूँ उपाय।।

माई बोलीं सुनो बेटी, मैं बताती एक उपाय,
औसान बीबी की सुहागलें बोलो, उससे चिड़ियाँ ठीक हो जायें।।

माई बोली सुनो बेटी, तुम तो एक काम करना,
सवा टके का गुड़ लेना, और सवा टके के चने लेना।।

पाँच सुहागिनों को बुलाकर, उनको तिलक,माहुर लगाना,
औसान बीबी की कथा सुनकर, उनका तुम आशीष पाना।।

माई बोली सुनो बेटी, अब तुम करो न कोई चिंता,
औसान बीबी की कृपा से, दूर होगी तेरी विपदा।।

राजकुमारी दौड़ीं गईं, गुड़ और चना ले आईं,
लेकिन फिर वो लगी सोचने, चना कैसे भूंजू माई।।

तभी उन्होंने वहाँ देखा, एक बरात जा रही थी,
राजकुमारी सबसे बोलीं, मेरे चना भुंजवा दो कोई।।

राजकुमारी की बात सुनकर, देखो सब कहने लगे,
जब तक तुम्हारे चने भुंजेंगे, शादी के मुहूर्त निकल जायेंगे।।

उन सबके जाते वहाँ से, फिर एक शवयात्रा निकली,
राजकुमारी उनसे बोलीं, कोई चना भुंजवा दो जल्दी।।

सबने सोचा थोड़ी देर में, क्या फर्क पड़ जायेगा,
राजकुमारी के चना भूंजने में, अपना क्या चला जायेगा।।

चना भूंजने के बाद फिर, राजकुमारी ने सुहागलें कीं,
औसान बीबी की कृपा से, चिड़ियाँ भी सब जी उठीं।।

कुछ देर के बाद ही, ऐसा चमत्कार हूआ,
औसान बीबी की कृपा से, मुर्दा जीवित हो उठा।।

और दूसरी तरफ देखो, दूल्हा मूर्छित हो गया,
बराती सब दौड़ के आये, पूंछे तुमने क्या किया।।

राजकुमारी उनसे बोलीं, कुछ भी मैंने न किया,
मैंने सुहागलों के लिये, चना भुंजाने को कहा।।

उनकी बात मानकर सबने, सुहागलों का नियम लिया,
औसान बीबी की कृपा बरसी, दूल्हा ठीक हो गया।।

उसी दिन से सब लोग, सुहागलें करने लगे,
औसान बीबी की कृपा से, सबके काम बनने लगे।।

रविवार की कथा

आओ-आओ एक बात सुनायें, रविवार की कथा सुनायें,
कहतीं थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

एक गाँव में सास-बहू थीं, संग में हिल-मिल रहतीं थीं,
बहू का पति था देवातार, था साक्षात सूर्य का अवतार।।

रहता सदा अंतर्ध्यान, कोई न जाने उसका ज्ञान,
समय-समय पर वो है आता, दो हीरे वो साथ में लाता।।

एक हीरा वो माँ को देता, दूजा पत्नि को है देता,
इससे उनका खर्चा चलता, उसी से पालन-पोषण होता।।

नाम उसका सूर्यबलि था, सूर्य का तेज उसमें भी था,
एक दिन माता बोलीं उससे, कहनी है एक बात तुझसे।।

जो कुछ भी तुम लाकर देते, खाना भी नहीं मिलता उससे,
पालन-पोषण भी न ढंग से, नहीं गुजारा चलता उससे।।

माता की जब बात सुनी तो, सूर्यबलि अचरज से बोले,
जो हीरे में तुमको देता, वह तो सारी उम्र भर चले।।

दोनों ही भूखी रहती हो, इससे तो स्पष्ट यही है,
एक बात कहूँ दोनों की, नीयत बिल्कुल ठीक नहीं है।।

अपने भरण-पोषण के सिवा, कर्त्तव्यों का ध्यान नही है,
धर्म-काज को छोड़ है दीन्हा, भक्ति-पूजा की ही नही है।।

तुम दोनों के कर्मों से ही, अभाव सदा ही रहता तुमको,
धर्म विरुद्ध आचरण से ही, सदा नही में मिलता तुमको।।

सूर्यबलि की बात सुनी जब, सास-बहू की समझ में आई,
फिर दोनों ने मिलकर देखो, कार्तिक-स्नान की कसम है खाई।।

बारह-वर्ष विधि पूर्वक से, कार्तिक स्नान उन्होंने कीन्हा,
फिर उद्यापन करने का, विचार उन्होंने मन में कीन्हा।।

सूर्यबलि से पत्नि बोली, नाथ इतना कीजिये,
कार्तिक उद्यापन करने का, प्रबंध आप कर दीजिये।।

सूर्यबलि की इच्छा से, सब प्रबंध हो गया,
धन-धान्य सामग्री से, घर परिपूर्ण हो गया।।

प्रातः काल ही देखो उन्होंने, कार्तिक का स्नान किया,
सांयकाल विस्तार से, सूर्यदेव का पूजन किया।।

सूर्यदेव ने दर्शन देकर, स्त्री से है ये कहा,
जो भी चाहो मांग लो, ये वरदान तुमको है दिया।।

हाथ जोड़कर स्त्री बोली, प्रभु इतना कीजिये,
मेरा पति है दूर रहता, उसको मुझे मिलवा दीजिये।।

तथास्तु कहकर नाथ भी, अंतर्ध्यान हो गये,
बहू को मन चाही मुराद, वरदान में वो दे गये।।

हुई रात्रि की बेला जब, सूर्यबली ने माँ से कहा,
आज मैं घर पर सोऊंगा, ऐसी है मेरी इच्छा।।

बहू ने जब बात सुनी तो, प्रसन्नता से भर गई,
उसके रात्रि विश्राम की, तैयारी वो करने लगी।।

सूर्यदेवता मानव रूप में, जब शयन करने लगे,
जगत में छाया अंधेरा, सब व्याकुल होने लगे।।

मुनि, नाग, गंधर्व सब, त्राहि-त्राहि करने लगे,
सब आये फिर उनके घर, माँ से प्रार्थना करने लगे।।

माई अपने पुत्र को, जाकर जगा तो दीजिये,
इस पूरे संसार को, रोशनी से भर दीजिये।।

प्रार्थना उनकी सुनकर के, माई ने पुत्र को जगाया,
उसने बाहर आकर फिर, जगत में उजाला भी फैलाया।।

बोले सूर्यबलि सुनो, सास-बहू ये दोनों संग,
जब तक कार्तिक है नहाये, इनके घर में बहे गंग।।

ऋद्धि-सिद्धि वास करें, धन-धान्य से परिपूर्ण रहे,
घर सदा ही भरा रहे, कभी कोई कमी न रहे।।

देवताओं ने देखो फिर, सूर्यदेव को नमस्कार किया,
ऐसा ही होगा कहकर फिर, उनका आदेश स्वीकार किया।।

कार्तिक स्नान जो भी करता, सदा ऋद्धि-सिद्धि पाता,
उनके घर में गंगा बहतीं, धन का भंडार भी भर जाता।।

सोमवार की कथा

(सोमवती अमावस्या)

आओ हम सब नाचें-गायें, सोमवार की कथा सुनायें,
कहतीं थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

एक गाँव की बात पुरानी, माँ,बेटी और बहू सयानी,
पूजा करतीं तीनों मिलकर, रहतीं थीं तीनों हिल-मिलकर।।

एक थे गुणी साधुबाबा, रोज भिक्षा माँगने आते,
अपने आशीर्वचनों से, सबके मन को खुश कर जाते।।

बहू को आशीष देते, "दूधो-नहाओ,पूतो-फलो"
बेटी से हैं हरदम कहते, "धर्म बढ़े,गंगा स्नान"।।

एक दिन बेटी बोली माँ से, एक बात है सच तो बताओ,
अलग-अलग आशीष मिलता, क्या कारण है ये तो बताओ।।

माता बोली मैं क्या जानूँ, ये तो साधु बाबा जाने,
और एक दिन माता भी फिर, साधु से कारण लगीं पूछने।।

साधु बोला सुन मैया तू, एक बात है तुझे बताऊँ,
बेटी का सुहाग है खंडित, तभी ऐसा आशीष दे जाऊँ।।

माता बोली साधु बाबा, कुछ उपाय अब आप बतायें,
ताकि मेरी बेटी भी, अखंड सौभाग्यवती हो जाये।।

साधु बोला तेरे गाँव में, रहती है एक सुम्मा धोबिन,
बेटी से कहना वो जाकर, उसकी सेवा करे वो प्रतिदिन।।

कुछ न बन सके यदि तो, जाकर झाड़ू-बुहार करे,
उसके गधे जहां बंधते हों, वहां की वो टहल करे।।

वो है पतिव्रता एक नारी, आशीष इसको दे देगी,
तेरी बेटी भी फिर मैया, अखंड सुहाग पायेगी।।

दूसरे दिन से बेटी भी फिर, धोबिन के घर जाने लगी,
उसके घर की साफ-सफाई, प्रतिदिन वो करने लगी।।

धोबी-धोबिन दोनों ही फिर, अचरज में पड़ने लगे,
कौन करता रोज सफाई, बैठकर वो सोचने लगे।।

राज जानने की खातिर फिर, धोबिन छिप कर बैठ गई,
ज्यों ही बेटी घर में आई, उसे पकड़ने दौड़ पड़ी।।

हाथ पकड़ कर धोबिन बोली, लगती तुम भले घर की,
टहल करने क्यों हो आती, बात बताओ राज की।।

लड़की ने साधुबाबा की, बात का बखान किया,
फिर धोबिन ने आशीष देकर, लड़की को विदा किया।।

लड़की के घर धोबिन आकर, उसकी माँ से कहने लगी,
एक काम मैं तुझे बताऊं, जरूर कर लेना सखी।।

इसकी शादी जब भी होवे, एक बात याद रखना,
इसके फेरे के समय, मुझको भी बुलवा लेना।।

अपना आशीष देकर मैं, सौभाग्य इसको दे दूंगी,
और तेरी बेटी को, सौभाग्यवती बना दूँगी।।

विवाह की शुभ-बेला आई, धोबिन को निमंत्रण भेज दिया,
धोबिन ने भी जाते-जाते, घर वालों से बोल दिया।।

मेरी गैरहाजिरी में यदि, मेरे पति मृत हो जायें,
जब तक मैं भी आ न जाऊँ, क्रिया-कर्म कोई कर न पाये।।

जिस समय सुम्मा धोबिन ने, बेटी को सुहाग दिया,
उसी समय उसका पति, मृत अवस्था को प्राप्त हुआ।।

परिजन बैठ कर लगे सोचने, सुम्मा घर जब आयेगी,
बहुत विलाप करेगी वो तो, अथाह दुख पायेगी।।

बोले वे सब देखो मिलकर, एक काम किया जाये,
उसके घर आने से पहले, धोबी का क्रिया-कर्म हो जाये।।

धोबी के मृत शरीर को, श्मशान वो ले जाने लगे,
राह में थी सुम्मा धोबिन, देखकर वो रुक गये।।

सुम्मा बोली क्या हुआ, ये किसको तुम ले जा रहे,
बोले मृत शरीर तेरे पति का, दाह-क्रिया करने जा रहे।।

अपने पति के मृत शरीर को, सुम्मा ने उतरा लिया,
पीपल के पेड़ के नीचे, उसको तो रखवा दिया।।

लड़की की माँ ने सुम्मा को, मिट्टी का पुरवा था दिया,
सुम्मा ने पीपल के नीचे, एक सौ आठ टुकड़ों में फोड़ दिया।।

पतिव्रत धर्म का ध्यान कर, शिव-पार्वती की पूजा की,
पीपल के पेड़ की पूरी, एक सौ आठ परिक्रमा की।।

इसके बाद सुम्मा धोबिन ने, अपनी तर्जनी ऊँगली को चीर दिया,
पति के ऊपर रक्त छिड़ककर, उसको जिंदा कर दिया।।

इस व्रत की है इतनी महिमा, जो स्त्री इसको करती है,
देवी माँ की कृपा बरसती, अखंड सौभाग्यवती वो रहती है।।

कार्तिक के महीने में देखो, सोमवार का व्रत कीजे,
पहले में तो धान-पान से, एक सौ आठ परिक्रमा कर लीजे।।

दूजे सोमवार दूध से, तीजे में वस्त्र से कर लीजे,
चौथे में धातु के बर्तन से, एक सौ आठ परिक्रमा कर लीजे।।

किन्तु एक बात है मेरी, सदा ही ये ध्यान रखिये,
सबसे ऊपर श्रद्धा-भक्ति, ईश्वर को मना लीजे।।

मंगलवार की कथा

आओ-आओ एक बात सुनायें, मंगलवार की कथा सुनायें,
कहतीं थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

एक गाँव में एक थी बुढ़िया, मंगल का व्रत करती थी,
मंगलिया नाम का पुत्र था उसका, बहुत प्यार वो करती थी।।

मंगल के दिन बुढ़िया देखो, न लीपा-पोती करती थी,
न मिट्टी का खोदन करती, व्रत श्रद्धा से करती थी।।

एक दिन देखो मंगल देवता, साधु का वेश बना आये,
बुढ़िया के घर में आ कर के, जोर-जोर से आवाज लगाये।।

बाहर आकर बुढ़िया बोली, बेटा गया खेलने गाँव,
मैं भी अपनी गृहस्थी के, कर रही हूं सारे काम।।

क्या आज्ञा है साधु बाबा, कृपा करके आप बतायें,
जो बनेगा वह करूंगी, अपना आशीष भी देते जायें।।

साधू बोला सुनो माई, भूख लगी है जोर से,
भोजन मुझे बनाना है, तू थोड़ी भूमि लीप दे।।

बुढ़िया बोली साधु बाबा, आज तो मैं मंगल व्रती,
क्षमा करना आप मुझको, लीपा-पोती करती नहीं।।

कहिये तो पानी छिड़ककर, चौका मैं लगा दूँगी,
आप अपनी रसोई बना लें, फिर जो कहो वो कर दूँगी।।

साधु बोला मैं सदा ही, गोबर से लिपवाता हूँ,
और उसी भूमि पर ही, रसोई मैं बनाता हूँ।।

बुढ़िया बोली सुनो बाबा, आज बहुत मजबूर हूँ,
भूमि लीपने की जगह, कुछ भी करने तैयार हूँ।।

साधु बोले सुनो बुढ़िया, सोच-समझकर बोलना,
मैं तुझसे जो काम कहूंगा, वही तुझे होगा करना।।

तीन बार हामी भरकर, बुढ़िया ने वचन दे दिया,
फिर साधु के कहने पर, अपने लड़के को बुला लिया।।

साधू बोले अपने लड़के को, भूमि पर औंधा लिटा दो,
और उसकी पीठ पर, भोजन मुझे बनाने दो।।

बाबा की बात सुनकर, बुढ़िया तो चुप रह गई,
बाबा बोले बुला लड़के को, अब क्या सोच विचार रही।।

बुढ़िया ने मंगलिया कहकर, लड़के को बुला लिया,
और फिर उसको तो, साधु के पास भेज दिया।।

बाबा बोले अपने लड़के को, जमीन पर उल्टा लिटा दो,
और उसके ऊपर फिर, अँगीठी भी जला दो।।

मंगल देव का स्मरण करके, बुढ़िया ने ऐसा ही किया,
लड़के की पीठ पर देखो, अंगीठी को जला दिया।।

साधु ने रसोई बनाई, फिर बुढ़िया को आवाज लगाई,
माई आओ, लड़के को बुलाओ, तुम दोनों प्रसाद ले जाओ।।

बुढ़िया बोली साधु बाबा, ये आप क्या कह रहे,
उसकी पीठ पर आग जलाई, उसी को ही बुला रहे।।

साधु बाबा के समझाने पर, बुढ़िया ने आवाज लगाई,
एक अचंभा उसने देखा, लड़का दौड़कर आ जाई।।

साधु ने प्रसाद खिला कर, माई से है ये बोला,
तेरे ह्रदय में दया भाव है, व्रत तेरा सफल होगा।।

अपने इष्ट देव के प्रति, तेरी अपार श्रद्धा है,
इस कारण तेरा कभी, अनिष्ट नहीं हो सकता है।।

आशीर्वाद सदा मेरा ही, तेरे हरदम संग रहेगा,
धन-धान्य की होगी वर्षा, सदा जीवन खुशहाल रहेगा"।।

बुधवार की कहानी

आओ-आओ एक बात सुनायें, बुधवार की कथा सुनायें,
कहतीं थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

एक देश में था एक बनिया, व्यापार किया करता था,
व्यापार करने के लिये, इधर-उधर भी जाता था।।

एक बार बनिया तो देखो, दूर देश को चला गया,
उसके घर उसकी पत्नि को, बच्चा होने का समय आ गया।।

उसकी गैरहाजिरी में एक, सुंदर बालक पैदा हुआ,
बुधवार का शुभ दिन था वो, शुभ नक्षत्र में जन्म लिया।।

बनिया को विदेश में फिरते, बारह वर्ष बीत गए,
कड़ी मेहनत से उसने तो, खूब धन-रुपए कमा लिए।।

धन को फिर गाड़ियों में भरकर, अपने घर को चल दिये,
गांव समीप आने पर उसकी, गाड़ियों के पहिये अटक गये।।

बनिये ने गाड़ियां हटाने के, यथा-साध्य उपाय किये,
किंतु उसके बैल तो, तिल भर भी है नहीं हटे।।

आसपास के गांव से, पंडितों को उसने बुला लिया,
गाड़ियों को चलाने का, उपाय उनसे पूछने लगा।।

पंडितों ने पंचांग देखा, फिर विचार कर बोले,
एक ही उपाय है, अब तो तू वही कर ले।।

बुधवार को जन्म लिया, यदि कोई बालक मिल जाये,
गाड़ियों को वह हाथ लगा दे, तेरी गाड़ियां फिर से चल जायें।।

देखो तो वह बनिया फिर, अपने गांव को पहुंच गया,
स्त्रियों से ऐसे बालक का, पता वह पूछने लगा।।

बोली स्त्रियां सुनो भाई, जैसा बालक तुम ढूंढते हो,
तेरे ही घर में है वह तो, उसे क्यों नहीं ले जाते हो।।

स्त्रियों के कहने पर बनिया, अपने घर को चल दिया,
उसने देखा द्वार पर, एक सुंदर बच्चा खेल रहा।।

बनिए ने बालक से देखो, उसके पिता का नाम पूछा,
बालक ने फिर बनिए का ही, नाम उसे बता दिया।।

बनिया बोला बेटा सुनो, मैं ही तुम्हारा पिता हूं,
एक काम तुम मेरा कर दो, मैं तुम्हें बतलाता हूं।।

मेरी गाड़ियां अटकी पड़ी, तुम उनको हाथ लगा देना,
ईश्वर की कृपा से तुम, उनको फिर से चलवा देना।।

लड़के ने पूरी बात सुनकर, पिता के साथ चल दिया,
गाड़ियों में हाथ लगाकर, उनको तो चलवा दिया।।

बनिए ने घर में जाकर के, दान-पुण्य भी खूब कराया,
बालक के संस्कार कराकर, उत्सव भी है खूब मनाया।।

तभी पुरातन काल से, सभी कोई यही कहता,
बुधवार को जन्मा बच्चा, प्रतापी बुद्धिमान होता।।

देखो भाई जो भी स्त्रियां, बुधवार के व्रत करेंगी,
मनचाही संतान पाकर, सुख सौभाग्य प्राप्त करेंगी।।

गुरुवार की कथा

आओ-आओ एक बात सुनायें, गुरुवार की कथा सुनायें,
कहतीं थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

एक धनवान साहूकार की, बीवी थी बड़ी कंजूस,
दान-पुण्य कभी न करती, रखती धन को ठूंस-ठूंस।।

गुरुवार के दिन उसके घर, एक साधुबाबा आये,
भिक्षा माँगने के लिये, जोर-जोर से आवाज लगाये।।

उस समय स्त्री गोबर से, घर का आँगन लीप रही थी,
बोली बाबा बाद में आना, अभी तो फुर्सत नहीं है।।

दूसरे दिन फिर से बाबा ने, आकर के आवाज लगाई,
स्त्री बोली बाद में आना, बच्चा खिला रही हूँ भाई।।

साधुबाबा निराश होकर, वापस वो लौट गये,
तीसरे दिन फिर से वे देखो, भिक्षा लेने आ गये।।

स्त्री बोली आज भी, बिल्कुल भी फुरसत नही,
बाबा बोले फुरसत होगी, तो भिक्षा तुम क्या दे सकोगी।।

स्त्री बोली ऐसा हो जाये, तो मुझ पर बहुत कृपा होगी,
बाबा बोले फुरसत रहने के, उपाय तुम सुन लो अभी।।

बाबा बोले सुनो स्त्री, जो कहूँ तुम वही करो,
गुरुवार के दिन घर में ही, कूड़ा-करकट जमा करो।।

गुरुवार के दिन खास ही, सिर से तुम स्नान करो,
भोजन को भी तुम बनाकर, चूल्हे के पीछे रखा करो।।

अपने घर वालों से कह दो, वो भी सब एक काम करें,
गुरुवार के दिन खास ही, बाल वो कटवाया करें।।

शाम को भी दिया-आरती, देर से तुम किया करो,
और इन सब कामों को, लगातार गुरुवार करो।।

ईश्वर ने चाहा यदि तो, चार गुरुवार के बाद,
न तो कोई काम रहेगा, मिलेगा भरपूर अवकाश।।

एक बात तुम याद रखना, दक्षिणा मुझे जरूर देना,
स्त्री ने बाबा से कहा, अब तो तुम अवश्य आना।।

विधि बताकर बाबा ने, फिर अपनी रवानगी ली,
साहूकारिनी भी नियम से, वैसे ही काम करने लगी।।

कुछ दिनों के बाद तो देखो, उसका ऐसा हाल हो गया,
धन-धान्य का ढेर भी, सब कुछ समाप्त हो गया।।

रुपया-पैसा, सोना-चांदी, सब कुछ खत्म हो गया,
खाने के भी लाले पड़ गये, घर बर्बाद हो गया।।

कुछ दिनों के बाद फिर से, साधुबाबा घर आये,
भिक्षा माँगने के लिये, जोर से आवाज लगाये।।

साहूकारिन तुरंत दौड़कर, बाहर देखो आ गई,
साधुबाबा के चरणों में, जाकर वो गिर गई।।

बोली बाबा विनती सुन लो, आपने अच्छी विधि बताई,
खाने को भी अन्न नहीं है, भिक्षा कहाँ से दे दूं भाई।।

बाबा बोले साहूकारिन, बहाना क्यों बनाती हो,
पहले भी कुछ न देती थी, अब आँसू क्यों बहाती हो।।

बाबा बोले तुम्हारे पास, अब तो कोई काम नहीं,
क्या चाहती हो अब बोलो, नही तो जाऊँ और कहीं।।

हाथ जोड़कर वह फिर बोली, मुझे बतायें कोई उपाय,
जिससे मेरी माली हालत, पहले जैसी ही हो जाये।।

अब मैं देती वचन आपको, जो भी आप उपदेश देंगे,
हाथ जोड़कर करते विनती, सब उसका अनुसरण करेंगे।।

बाबा बोले घर के लोगों को, एक बात तुम दियो बताय,
केवल बुध या शुक्रवार को, सब लोग ही बाल कटवाये।।

सूर्योदय के पहले उठकर, घर की साफ-सफाई करो,
शाम को भी सही समय पर, दिया तुम जलाया करो।।

सदा ही रसोई बनाकर, चूल्हे के सामने रखा करो,
भूखे-प्यासे व्यक्ति को, अन्न-जल भी दिया करो।।

अपने बहिन-भांजे को भी, दान-मान तुम दिया करो,
उनका उचित आदर करके, उनको भी संतुष्ट रखो।।

स्त्री ने साधुबाबा की, हर बात को मान लिया,
कुछ दिन में उसका घर भी, धन-धान्य से भी भर गया।।

गुरुवार के व्रत की देखो, इतनी खूब महत्ता है,
सुख-सौभाग्य,स्वास्थ्य को पाकर, हर कोई खुशी से रहता है।।

शुक्रवार की कथा

आओ-आओ एक बात सुनायें, शुक्रवार की कथा सुनायें,
कहती थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

एक गाँव में थे दो लड़के, उनमें बहुत थी मित्रता,
एक था प्रधान का लड़का, दूजा साहूकार का।।

प्रधान के लड़के की पत्नि, उसके संग में रहती थी,
साहूकार के लड़के की तो, मायके में ही रहती थी।।

रात को प्रधान का लड़का, अपने घर जब जाता था,
साहूकार के लड़के से वह, एक ही बात कहता था।।

मैं तो अपने घर जाकर के, सोऊंगा आराम से,
तुम भी अपने घर में जाकर, घर में ही रहना आराम से।।

एक दिन उसके मित्र ने बोला, रोज ऐसा क्यों कहते हो,
क्या है इसका कारण बताओ, विस्तारपूर्वक तुम कहो।।

बोला प्रधान का लड़का, मैं जो भी कहता ठीक कहता,
हमारे तुम्हारे जीवन में, अंतर है इसलिये कहता।।

रात को जब मैं घर पर जाऊँ, कमरे में दिया जलता मिले,
पत्नि भोजन का थाल लिये, प्रतीक्षा करती हुई मिले।।

प्रेम से वो स्वागत करती, मेरे पैर को धोती है,
उसके बाद ही फिर वो देखो, प्रेम से भोजन परोसती है।।

जब तुम अपने घर जाते हो, भोजन के लिये बोलते हो,
माँ,भावज और बहन प्यारी, किसी से भी खाना ले लेते हो।।

भोजन करके तुम तो देखो, किसी कोने में सो जाओगे,
सवेरे जल्दी भी उठ करके, अपने काम में लग जाओगे।।

सखा इस प्रकार से देखो, मेरा कहना जायज है,
तुम्हारे-हमारे रात्रि बिताने में, अंतर बहुत ज्यादा है।।

प्रधान के लड़के की बात का, मित्र को कुछ बुरा लगा,
अपनी पत्नि को घर लाने का, विचार वो करने लगा।।

ससुराल जाने की वो तो, तैयारी भी करने लगा,
घर के लोगों ने मना किया, तो अनसुनी वो करने लगा।।

परिजनों ने समझाया उसको, द्विरागमन का समय नहीं,
शुक्र के उदय होते ही, पत्नि को ले आना यहीं।।

उसने किसी की बात न मानी, ससुराल को वो चला गया,
दामाद को आया देखकर, सब कोई अचरज में भर गया।।

सब लोगों ने उसे समझाया, इस तरह विदा होती नहीं,
शगुन-साथ से आना चाहिये, किन्तु सुनने वो तैयार नहीं।।

सबने फिर लाचार होकर, बेटी को विदा कर दिया,
कुछ दूर चलने के बाद ही, देखो कुछ ऐसा हुआ।।

हुआ सूर्योदय शुक्र देवता, मानव के रूप में आ गये,
साहूकार के पुत्र के सामने, जाकर वे खड़े हो गये।।

बोले स्त्री को चुराकर, तू कहाँ ले जाता है,
लड़का बोला ये मेरी स्त्री, किसी का क्या जाता है।।

शुक्र देवता बोले फिर से, ये तेरी नहीं मेरी ब्याही,
मेरी आज्ञा के बिना तू, इसे ले जा सकता नहीं।।

यह बात सुनते ही तो, लड़का नाराज हो गया,
फिर शुक्र देवता ने भी, स्त्री का हाथ पकड़ लिया।।

दोनों इसी तरह झगड़ते, पास के गाँव में चले गये,
फिर वहाँ के मुखिया से, पंचायत करने कहने लगे।।

पहले लड़के की बात सुन, शुक्रदेवता की बात सुनने लगे,
और फिर शुक्रदेवता, लड़के से कहने लगे।।

सनातन धर्म में सदा से, यही परिपाटी चली आई,
शुक्र के उदय होते ही, शुभ अनुष्ठान होते भाई।।

द्विरागमन की विदा भी, शुक्र अस्त में होती नहीं,
द्विरागमन के पहले तक, तुम्हारी ब्याही होती नहीं।।

शुक्रदेवता की बात सुन, पंच भी सहमत हो गये,
स्त्री अभी तेरी नहीं, ऐसा सब कहने लगे।।

स्त्री को अपने पिता के, पास तुम छोड़ आओ,
शुक्र के उदय होने पर ही, इसे लिवाकर ले आओ।।

लाचार होकर वह लड़का, स्त्री को वापस छोड़ आया,
फिर शुक्र के उदय होने पर ही, ससुराल से विदा करा लाया।।

जो भी प्रजाजन विधिपूर्वक, सब काम ऐसे करते हैं,
उनके घर आनंद बरसता, सुखपूर्वक वो रहते हैं।।

शनिवार की कथा

आओ-आओ एक बात बतायें, शनिवार की कथा सुनायें,
कहतीं थीं दादी और नानी, उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

कन्हैया जी के समय की, देखो ये है बात,
हाथ जोड़ विनती करें, प्रभु राखियो मेरी लाज।।

देखो-देखो रुक्मणी रानी, यादव कुल की श्रेष्ठ पटरानी,
छोटी बहन थी बड़ी कर्कशा, और दरिद्र प्रकृति की स्वामी।।

उसके संग में देखो तो, बानिक हो या राजकुमार,
ब्याह करना नहीं चाहता, कोई भी न होता तैयार।।

एक दिन श्रीकृष्ण जी से, रुक्मणी ने करी चाह,
अब तो नाथ आप ही, करवा दो अब उसका ब्याह।।

कुलक्ष्मी का ब्याह कृष्ण ने, करा दिया एक मुनि के साथ,
मुनिवर थे ज्ञानी-ध्यानी, करते रहते पूजा-पाठ।।

मुनि पूजा में लीन रहते, वह न उनसे झगड़ पाती,
संध्या-सवेरे शंख बजते, वह दहाड़ें मार खूब रोती।।

कुलक्ष्मी की इस बात से, मुनिजी बहुत दुखी होते,
सोचते मैं क्या करूँ, जिससे ये सुखी होवे।।

एक दिन मुनि ने देखो फिर, कुलक्ष्मी से ही पूछ लिया,
क्या तुम्हें अच्छा लगता, वही काम मैं करूँ सदा।।

कुलक्ष्मी बोली मुनि से, तुम करते हो जितने काम,
मुझको सबसे घृणा है, तुम छोड़ो ये सारे ही काम।।

पितृ पूजा,दान-पुण्य, जप और पूजा-अर्चना,
देवार्चन, यज्ञादि, मुझे इनसे है घृणा।।

जहां खूब कलह होता, वह जगह लगे मुझे प्यारी,
जीवों का उत्पीड़न देखकर, मुझे मिले प्रसन्नता भारी।।

मुनि बोले चलो तुम, एक जगह मैं जानता हूँ,
खुश रहोगी तुम सदा, वहाँ तुमको ले चलता हूँ।।

आगे चलकर वे दोनों फिर, सघन वन में पहुँच गये,
एक ऊँचे पीपल के पेड़ पर, उसे बैठाकर चले गये।।

हुई अर्धरात्रि जब, कुलक्ष्मी तो रोने लगीं,
उसी समय रुक्मणी देखो, प्रभु को भोजन करा रहीं।।

बहन का रोना सुनकर रुक्मणी, प्रभु से कहने लगीं,
किसके संग में ब्याह कराया, मेरी बहन है रो रही।।

वनवासी मुनि ने उसको, जंगल में है छोड़ दिया,
कैसा वो विलाप कर रही, तनिक भी नही आती दया।।

भगवान बोले सुनो रुक्मणी, तुम्हारी बहन है कर्कशा,
कुछ न कुछ तो कारण होगा, तभी मुनि ने छोड़ दिया।

वह मुनि को भजन-पूजन में, बाधा भी डालती होगी,
और मुनिश्रेष्ठ को भी, झगड़ने पर विवश करती होगी।।

संसार में भले के तो, होते हैं अनेक साथी,
किन्तु बुरे के साथ तो, कोई खड़ा होता नहीं।।

रुक्मणी ने करी प्रार्थना, कुछ उपाय तो कीजिये,
मेरी बहन कुलक्ष्मी का, निर्वाह आप कीजिये।।

रुक्मणी की बात सुन, भगवान भी फिर चले गये,
कुलक्ष्मी जहाँ रो रही थी, वहाँ वे पहुंच गये।।

कुलक्ष्मी से बोले प्रभु जी, क्या हुआ क्यों रो रही,
बोली अकेले जी घबराता, इसीलिये मैं रो रही।।

प्रभु बोले मुनि को तुम, परेशान करती होगी,
उनके भजन-पूजन में, बाधा भी डालती होगी।।

इसी कारण से उन्होंने, तुमको त्याग दिया होगा,
अब तुमको अपना ही देखो, आचरण भी बदलना होगा।।

एक बात का वचन तुम्हें भी, अब मुझको देना होगा,
पति के अनुकूल रहोगी, तभी कुछ उपाय होगा।।

बोली कुलक्ष्मी सुनो प्रभुजी, आज्ञा मानने को तैयार हूँ,
किन्तु मैं कुछ न कर सकती, स्वभाव से लाचार हूँ।।

कुलक्ष्मी से बोले कृष्णा, तुम हो कलहकारिणी,
तुम जैसी स्त्री के लिये, एकांत से अच्छा कुछ भी नहीं।।

एक आज्ञा सुनो हमारी, आज से एकांतवास करोगी,
इस पीपल के पेड़ के ऊपर, सदा तुम निवास करोगी।।

सभी देवता इसमें रहते, और संग में लक्ष्मी भी,
आज से तुम भी रहोगी, संग साथ एक शर्त भी।।

शनिवार को सूर्योदय से, पहले जो कोई पूजेगा,
वह सब देवताओं के संग में, लक्ष्मी जी तक पहुंचेगा।।

किन्तु शनिवार के दिन ही, सूर्योदय के बाद जो पूजेगा,
पूजन होगा तुमको समर्पित, उनके घर तेरा वास होगा।।

नाम - साधना छिरोल्या

पति का नाम - श्री कैलाश छिरोल्या

जन्म - १७ मार्च १९६४, जबलपुर (म.प्र.)

शिक्षा - बी.एस.सी. बी.एड.(गणित)

पता - यूनियन बैंक के सामने,राय चौराहा, दमोह (म.प्र.) ४७०६६१

मो. - ७०८९७३५१३५

ई. मेल - Sadhnachhirolya123@gmail.com

प्रकाशन - गहोई सूर्य अखबार (जबलपुर), गहोई संस्कार पत्रिका (जबलपुर), गहोई बंधु पत्रिका (ग्वालियर), दैनिक स्वदेश (ग्वालियर), लोकजंग (भोपाल), वाह! जिंदगी (हिंदी काव्य संग्रह), एक टुकड़ा मेघ (हिंदी कथा संग्रह), प्रभाश्री पत्रिका (वाराणसी उ.प्र.), वाह जिंदगी (हिंदी काव्य संग्रह), आपातकाल में सृजन फुलवारी (हिंदी काव्य संग्रह)।

साझा संकलन - कश्तियों का सफर (काव्य संकलन), उम्मीदों के परिंदे (काव्य संकलन), यादों का सफर (यात्रा वृतांत), स्त्री तुम सृजक, वुमन आवाज २(स्त्री), साहित्य सरोवर, स्त्री २, मानवता पर संकट

सम्मान - भाषण, नाटक, वाद-विवाद, तात्कालिक निबंध, कविता, सुलेख प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त। गहोई समाज और हितकारिणी स्कूल जबलपुर द्वारा हिंदी काव्य लेखन के लिये सम्मानित।

अंतरा शब्द शक्ति सम्मान२०१९, मातृभाषा उ.संसथान द्वारा हिंदी योद्धा सम्मान, हिंदी साहित्यकार स्वाभिमान सम्मान२०१९, कवि चौपाल शारदा सम्मान, अंतरा शब्द-शक्ति द्वारा कहानी प्रतियोगिता में पुरस्कार, अ.भा.सा.परि. विराटनगर जयपुर द्वारा सर्वश्रेष्ठ सृजन 'साहित्य गौरव' पुरस्कार, काव्य गोष्ठी सबके लिये द्वारा उत्कृष्ट सृजन पुरस्कार, प्रभाश्री द्वारा साहित्य सम्मान, वुमेन आवाज द्वारा महिला दिवस साहित्य सम्मान, साहित्यिक मासिक स्पर्धाओं में सम्मान, साहित्यिक मित्र मंडल जबलपुर द्वारा अनेक साहित्यिक पुरुस्कार, मीन साहित्यिक संस्था द्वारा लघुकथा के लिए विशेष पुरुस्कार, कृष्ण कलम मंच द्वारा वॉइस ऑफ हार्ट काव्य पुरस्कार, स्वरश्री पुरस्कार।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान, है प्रमाण देशभक्ति का.. आइए करें सृजन, शब्द से शक्ति का...

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला – बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331, मो.– 9424765259, ईमेल – antrashabdshakti@gmail.com

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com

Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/

Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

978-93-5372-260-9

मूल्य 250/–